''बाँदा जनपद में संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना के प्रभाव का अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन के आधार पर प्रस्तुत प्रतिवेदन''

BUNDELKHAND UNIVERSITY JHANSI
ESTB. AUGUST 26, 1975

सर्वेक्षक संस्था

समाज कार्य विभाग,
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी (उ0प्र0)

सर्वेक्षक

डॉ0 यतीन्द्र मिश्र
विभागाध्यक्ष समाज कार्य विभाग एवं मुख्य सर्वेक्षक (परियोजना)

एवं

गठित टीम (सर्वेक्षक एवं शोध छात्र)
डॉ0 बी.आर. अम्बेडकर, समाज विज्ञान संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी

(सन् 2024)

विषय-सूची

क्रम	ग्राम/ग्राम पंचायत, वि0ख0 एवं जनपद	पृष्ठ संख्या
1.	ग्राम नारायणपुर, विकास खण्ड कमासिन, जनपद बाँदा	1-19
2.	ग्राम मझीवा सानी, विकास खण्ड बिसण्डा, जनपद बाँदा	20-34
3.	ग्राम जखनी, विकास खण्ड महुआ, जनपद बाँदा	35-48
4.	ग्राम गोरेमऊ कलां, विकास खण्ड नरैनी, जनपद बाँदा	49-62
5.	ग्राम डाडामऊ, विकास खण्ड जसपुरा, जनपद बाँदा	63-76
6.	ग्राम नरी, विकास खण्ड तिन्दवारी, जनपद बाँदा	77-90
7.	ग्राम सहूरपुर, विकास खण्ड तिन्दवारी, जनपद बाँदा	91-105
8.	ग्राम गरौली शुक्ल, विकास खण्ड बबेरू, जनपद बाँदा	106-118
9.	ग्राम थरथुआ, विकास खण्ड बबेरू, जनपद बाँदा	119-131
10.	ग्राम बड़ोखर खुर्द, विकास खण्ड बड़ोखर, जनपद बाँदा	132-146
संलग्नक-		
	1. साक्षात्कार अनुसूची	

ग्राम नारायणपुर, विकास खण्ड कमासिन, जनपद बाँदा

प्रापक–

राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन,

नमामि गंगे तथा ग्रामीण जलापूर्ति विभाग,

किसान बाजार, विभूति खंड, गोमती नगर, लखनऊ।

प्रेषक–

विभागाध्यक्ष,

समाज कार्य विभाग,

बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी।

विषय– *''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना से बुंदेलखंड क्षेत्र के अंतर्गत बाँदा जनपद से चयनित कुल 10 ग्रामों के ग्रामवार प्रभाव आकलन का प्रतिवेदन।*

1.0 विषय परिचय

''जल जीवन मिशन'' केन्द्र सरकार द्वारा संचालित एक महत्त्वाकांक्षी परियोजना है जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र के प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता

सुनिश्चित करना है। यह योजना वर्ष 2019 में गोवा से संचालित की गयी थी, जिसके लक्ष्यों को वर्ष 2024 तक प्राप्त करने की समय–सीमा निर्धारित है। इस योजना द्वारा भारत के प्रत्येक ग्रामीण परिवार में स्वच्छ पेयजल की पहुंच सुनिश्चित करने हेतु नल का कनेक्शन दिये जाने तथा उस नल से प्रत्येक परिवार के प्रति सदस्य को प्रतिदिन लगभग 55 लीटर स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा गया है

जिससे कि जल संकट का समाधान प्रस्तुत करने के साथ ही स्वास्थ्य स्तर में सुधार एवं ग्रामीण क्षेत्र के लोगों का सर्वांगीण विकास किया जा सके।

2.0 साहित्य अवलोकन

स्वस्थ एवं कुशल मानव संसाधन के निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि उस राष्ट्र में निवास करने वाले लोग निरोग एवं स्वस्थ हों। स्वस्थ मानव संसाधन के निर्माण में संतुलित आहार एवं स्वच्छ पेयजल की भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का विकास होता है। इसलिए सम्पूर्ण स्वास्थ्य की प्राप्ति, जिसमें शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य सम्मिलित है, की कल्पना स्वच्छ पेयजल के अभाव में नहीं की जा सकती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद–21 के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने का अधिकार भारत के प्रत्येक नागरिक को प्राप्त है। इसमें स्वच्छ पेयजल का अधिकार भी एक मौलिक अधिकार के रूप में समाहित है। इसलिए सरकार का दायित्त्व है कि वह वंचित ग्रामीण आबादी तक स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करे, ताकि उनके जीवन स्तर में सुधारात्मक बदलावों को प्रेरित किया जा सके। यदि उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र की बात की जाये, तो यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही जल संकट का सामना करता रहा है। यहां पर औसत वार्षिक वर्षा बहुत कम होती है। यहां अधिकांश वर्षा दक्षिण–पश्चिम मानसून द्वारा जुलाई से सितंबर माह के मध्य होती है। पहाड़ी एवं पठारी क्षेत्र होने के कारण भूजल स्तर बहुत नीचे है। जल संकट ने यहां के जीवन को दुष्कर बनाया हुआ है। पर्याप्त एवं शुद्ध जल की कमी ने यहां के

लोगों के समक्ष गंभीर जल संकट उत्पन्न किया है जिसका समाधान नितांत आवश्यक है। इसके समाधान के लिए भारत सरकार द्वारा ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घल नल–हर घर जल'' परियोजना संचालित की जा रही है, ताकि जल संकट के समाधान के साथ–साथ आरोग्य की प्राप्ति एवं सामाजिक विकास के बहु–आयामी लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

3.0 प्रभाव आकलन का उद्देश्य

1. ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत बाँदा जनपद के विकास खण्ड कमासिन के ग्राम नरायनपुर में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के प्रभाव का आकलन।
2. ''हर घल नल–हर घर जल'' योजना क्रियान्वयन द्वारा ग्राम नरायनपुर में निवासित ग्रामीण जन के सामाजिक–आर्थिक, शैक्षिक तथा स्वास्थ्य एवं सामाजिक व्यवहार में बदलाव की स्थिति का अध्ययन।

4.0 प्रभाव आकलन की उपकल्पना

1. राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन द्वारा संचालित योजना ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना द्वारा ग्राम नरायनपुर, विकास खण्ड कमासिन, जनपद बाँदा में कृत कार्य से लोगों के जीवन स्तर में बदलाव आया है
2. ग्राम नरायनपुर में निवासित आबादी के स्वास्थ्य स्तर में सुधार हुआ है।

3. परियोजना के संचालन से ग्रामीण जन के सामाजिक–आर्थिक एवं शैक्षिक स्थितियों में बदलाव हुआ है।
4. परियोजना के संचालन से सामाजिक मनोवृत्ति एवं सामाजिक व्यवहार में बदलाव आया है।

5.0 अध्ययन की प्रणाली एवं उपकरण

अध्ययन हेतु शोध की निम्न तकनीकि एवं उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

1. अवलोकन
2. सहभागी मूल्यांकन

प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्र में निवासित प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 2019 से संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना का ग्राम नरायनपुर, विकास खण्ड कमासिन, जनपद बाँदा में रहने वाले लोगों के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन विधियों के आधार पर अध्ययन किया गया है।

6.0 अध्ययन की विधि

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सर्वप्रथम ग्राम नरायनपुर, विकास खण्ड कमासिन, जनपद बाँदा की कुल जनसंख्या, ग्राम में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी।

शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्री सुनील सिंह से ग्राम नरायनपुर की समग्रता के संदर्भ में बात किया गया। ग्राम प्रधान के साथ—साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों से भी बात करके नरायनपुर ग्राम की मूलभूत समस्याओं एवं उपलब्ध भौतिक संसाधनों तथा वर्णित योजना के प्रभाव के संदर्भ में जानकारी प्राप्त किया गया। इसके अतिरिक्त ग्राम

नरायनपुर में संचालित विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों तथा विद्यालय में नामांकित विद्यार्थियों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, ड्राप आउट की दर, विद्यालय में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं, विद्यालय में नल संयोजन की स्थिति आदि की जानकारी प्राप्त की गई। ग्राम में संचालित आंगनबाड़ी केन्द्र की कार्यकत्री एवं स्वास्थ्य केन्द्र की ए.एन.एम. से भी बात करके गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं एवं शिशुओं के स्वास्थ्य के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके पश्चात् न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों से घर—घर जाकर प्रत्यक्ष रूप से संपर्क स्थापित करके ''हर घर

नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के पश्चात् उनके जीवन में आये बदलावों के संदर्भ में जानकारी एकत्रित की गयी तथा वर्णित योजना द्वारा ग्रामीण लोगों के जीवन स्तर में आये बदलावों का अवलोकन किया गया।

7.0 जनसंख्या एवं नल संयोजन की स्थिति

ग्राम नरायनपुर की कुल आबादी–5000 है एवं कुल परिवारों की संख्या–900 तथा मतदाताओं की संख्या–2700 है। ग्राम नरायनपुर में नल कनेक्शन स्कोप–546 है जिसके सापेक्ष 546 नल कनेक्शन दिये गये हैं। ग्राम में निवासित सभी परिवारों को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त करते हुए नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। नल संयोजन की बेहतर अवसंरचना नरायनपुर ग्राम में है।

8.0 कृषि की स्थिति एवं आय के स्त्रोत

ग्राम प्रधान एवं अन्य पंचायत सदस्यों से प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम नरायनपुर में कुल लगभग 3600 बीघा जमीन उपलब्ध है जो कि 100 प्रतिशत उपजाऊ है जिसमें विभिन्न प्रकार की फसलों का उत्पादन किया जाता है, मुख्यतः दलहन की फसलें। प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम नरायनपुर में निवासित लोगों की आय का मुख्य साधन कृषि, पशुपालन तथा मजदूरी है क्योंकि अधिकांश आबादी की जीविका कृषि, पशुपालन एवं मजदूरी पर ही निर्भर है। ग्राम के कुछ लोग जीवकोपार्जन की चाहत में बड़े शहरों/महानगरों में पलायन कर गये हैं। गांव के कुछ लोग कृषि कार्य के साथ–साथ छोटे–मोटे रोजगार भी कर रहे हैं जिससे उन्हें अतिरिक्त आमदनी हो रही है।

9.0 ग्राम में विद्यालय की स्थिति

ग्राम नरायनपुर में एक प्राथमिक एवं एक उच्च प्राथमिक विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है। प्राथमिक विद्यालय में कुल 366 विद्यार्थी एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय में कुल 190 विद्यार्थी नामांकित हैं। विद्यालय को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से पूर्णतः संतृप्त किया जा चुका है। उक्त विद्यालयों में सभी मूलभूत सुविधायें उपलब्ध हैं। विद्यालय में शौचालय की सुविधा भी उपलब्ध है जिसका प्रयोग बच्चे नियमित रूप से कर रहे हैं। विद्यालय में नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। उक्त दोनों विद्यालयों में विद्यार्थी–शिक्षक अनुपात भी उचित पाया गया।

10.0 निदर्श निर्धारण

निदर्श की इकाइयों के निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। नरायनपुर ग्राम की कुल जनसंख्या 5000 के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार से 5000/10 = 500 न्यादर्शों को प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित किया गया है जिसमें 250 महिला एवं 250 पुरूष सम्मिलित हैं। अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्श की इकाइयों से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा उनके जीवन–स्तर में आये बदलावों के संदर्भ में जानकारी एकत्रित की गयी है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत अध्ययन में नरायनपुर ग्राम से संबद्ध हितधारकों से भी वर्णित योजना द्वारा आये बदलावों के संदर्भ में परिचर्चा किया गया है।

11.0 समाविष्ट के मानदण्ड

नरायनपुर ग्राम में केन्द्र सरकार द्वारा संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' द्वारा लोगों के जीवन स्तर में आये परिवर्तनों के मूल्यांकन हेतु ग्राम की सम्पूर्ण जनसंख्या के 1/10 वें भाग के साथ ही, ग्राम से संबद्ध हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

12.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसी इकाई को न्यादर्श एवं हितधारकों के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है, जो कि नरायनपुर ग्राम से सम्बद्ध और वर्णित योजना के लाभार्थी नहीं थे।

13.0 परिणाम एवं चर्चा

ग्राम नरायनपुर विकास खण्ड कमासिन, जनपद बाँदा का सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन के आधार पर ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना द्वारा लोगों की जीवन–स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श की इकाइयों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण वस्तुनिष्ठ एवं निष्पक्ष रूप से करते हुए निष्कर्ष निकाले गये हैं, जो कि निम्नलिखित हैं–

13.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा ग्राम नरायनपुर में महिलाओं के जीवन

स्तर में आये परिवर्तन का अध्ययन करने के लिए कुल 250 (कुल न्यादर्शों का 50 प्रतिशत) महिला न्यादर्शों से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार हैं– न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत अध्ययन की इकाइयों

ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के लागू होन के बाद से गांव के प्रत्यके परिवार को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो रहा है जिसके कारण ग्राम में निवासित लोगों के स्वास्थ्य में सुधार आया है क्योंकि जल–जनित बीमारियों से लोगों को छुटकारा मिला है। 98 प्रतिशत इकाइयों ने कहा कि इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है जिससे पैसे की बचत हुयी है जिसका उपयोग वह बच्चों की शिक्षा एवं कृषि आदि कार्यों में कर रही हैं। 95 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने बताया कि स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण महिलाओं के समय में बचत हुई है क्योंकि अब जल संग्रह पर कम समय लगता है और बीमारी कम होने से बीमारी के कारण आराम (बेड रेस्ट) करने पर व्यय होने वाले समय में भी कमी आयी है। 96 प्रतिशत के अनुसार समय की बचत होने के कारण महिलायें बच्चों एवं परिवार को अधिक समय दे रही है जिससे परिवार में उनकी भूमिका बढ़ी है तथा परिवार में खुशहाली आयी है। 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि जल की उपलब्धता के कारण शौचालयों के कार्यात्मक होने से उनके सम्मान एवं सुरक्षा में वृद्धि हुई है। 94 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं के अनुसार कृषि एवं पशुपालन तथा रोजगारपरक कार्यों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। स्वास्थ्य केन्द्र की ए.एन.एम. श्रीमती मीना राय ने बताया कि सभी महिलाओं के स्वास्थ्य में स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण सुधार आया है जिससे उन्हें मानसिक रूप से सुकून मिला है क्योंकि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पूर्व महिलाओं का स्वास्थ्य ठीक ना होने के कारण उन्हें प्रायः पारिवारिक जनों द्वारा ताने सुनने को मिलता था, कि इन्हें हमेशा बीमारी ही घेरे रहती है, इन्हें कुछ हुआ नहीं है, बस काम ना करना पड़े, इसलिए कला

की हैं। अब महिलायें शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वयं को स्वस्थ महसूस कर रही हैं। महिलाओं की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने एवं जल संकट की समस्या का समाधान करके वर्णित योजना ने महिलाओं की दशा में उल्लेखनीय सुधार किया है जिससे महिलाओं में योजना के प्रति संतुष्टि परिलक्षित हो रही है। यह योजना महिलाओं में खुशहाली का प्रतीक बनी हुई है।

13.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

शिक्षा की स्थिति को बेहतर करने में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना की भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। ग्राम नरायनपुर में एक प्राथमिक एवं एक उच्च प्राथमिक विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है जिसमें क्रमशः 399 एवं 190 बच्चे नामांकित हैं। उक्त दोनों विद्यालयों को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त करते हुए नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है जिससे बच्चों को विद्यालय में आने के लिए प्रेरणा मिली है। दोनों विद्यालयों में बच्चों के नामांकन दर में सुधार आया है और ड्राप आउट की समस्या कम हुई है। बालिकाओं के नामांकन में अधिक वृद्धि देखी गयी है क्योंकि अब अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता आयी है। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य के अनुसार बच्चों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता आने के कारण बीमारियां तो कम हुई ही हैं, साथ ही उनके पढ़ने–लिखने एवं सीखने की क्षमता में भी सुधार हुआ है। 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा अभिभावकों में शैक्षिक जागरूकता आयी है जिसके

कारण वह अपने बच्चों की पढ़ाई–लिखाई पर अधिक ध्यान दे रहे हैं। 94 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार अब बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजा जा रहा है। अतएव यह कहा जाना समीचीन होगा कि वर्णित योजना द्वारा शैक्षिक जागरूकता लाकर बच्चों के भविष्य को सुधारने में मदद मिली है।

13.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना का उद्देश्य जल संकट का समाधान करके स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करते हुए लोगों के स्वास्थ्य स्तर में भी सुधार लाना था। अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि स्वच्छ पेयजल की

उपलब्धता के कारण जल–जनित एवं पेट संबंधी बीमारियों में कमी आयी है जिससे उनका स्वास्थ्य बेहतर हुआ है। स्थानीय डॉक्टर के अनुसार अब दूषित जल से होने वाली बीमारियों के मरीज बहुत कम आ रहे हैं। अध्ययन में सम्मिलित 97 प्रतिशत उत्तरदाताओं से चर्चा करने पर पता चला कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा

इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है जिससे धन की बचत हुई है। अध्ययन में सम्मिलित 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि स्वच्छ पयेजल के कारण वह शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वयं को स्वस्थ्य महसूस करते हैं जिससे उनकी कार्य क्षमता में वृद्धि हुई है। न्यादर्श में सम्मिलित 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि अब जल से होने वाले बीमारियां जैसे– डायरिया, पेचिस, दस्त आदि में कमी आयी है। इस प्रकार से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने लोगों के स्वास्थ्य में सुधार करते हुए उन्हें खुशहालपूर्ण जीवन जीने का अवसर प्रदान किया है।

13.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा सामाजिक व्यवहार में आये बदलाव के संदर्भ में बात करने पर अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत लोगों ने बताया कि वर्णित योजना के संचालन के पूर्व गांव के सभी लोगों को स्वच्छ पेयजल प्राप्त नहीं हो पाता था क्योंकि वह स्वच्छ पेयजल पर होने वाले खर्च को वहन करने में सक्षम नहीं थे। न्यादर्शों ने बताया कि गांव के अमीर लोगों एवं उच्च जाति के अधिकतर लोगों को ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता योजना के संचालन के पूर्व थी। न्यादर्श में सभी इकाइयों से वर्तमान स्थिति के संदर्भ में चर्चा करने पर पता चला कि अब ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा सभी परिवारों को स्वच्छ पेयजल की पाइप द्वारा आपूर्ति नियमित रूप से की जा रही है जिससे गांव के सभी परिवारों स्वच्छ पेयजल की उलब्धता सुनिश्चित हुई है। स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता से लोगों के स्वास्थ्य में सुधार आया है जिससे उनकी सोच में भी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। 97 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि वर्णित योजना के कारण गांव में सामाजिक एकता को पोषण मिला है जिससे ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था में सुदृढ़ता आयी है और लोग खुशहाली से गांव में रह रहे हैं। 96 प्रतिशत लोगों ने बताया कि अब जल प्राप्ति के लिए लड़ाई–झगड़ों में कमी आयी है जिससे लोगों में सहकार का भाव निर्मित हुआ है।

शादी–विवाह में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा आये परिवर्तनों के संदर्भ में चर्चा करने पर 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वर्णित योजना के कारण

सामाजिक गतिशीलता एवं आधुनिक मूल्यों को प्रोत्साहन मिलने के कारण बाल–विवाह एवं दहेज की समस्या कम हुई है, विवाह में होने वाले दिखावे के कारण खर्च में बढ़ोत्तरी हुई है। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा सभी आय एवं जाति के लोगों को स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के साथ ही सामाजिक एकता एवं सहकारिता का भाव भी विकसित किया गया है। लोगों की सोच में सकारात्मक तत्त्वों के समावेश होने के कारण आधुनिक मूल्यों के प्रोत्साहन से सामाजिक न्याय भी सुनिश्चित हुआ है।

13.5 रोजगार के अवसर

''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा रोजगार के क्षेत्र में आये परिवर्तनों के संदर्भ में चर्चा करने पर न्यादर्श में सम्मिलित लोगों एवं हितधारकों ने बताया कि ग्राम नरायनपुर में अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि, पशुपालन एवं मजदूरी है। गांव के कुछ लोग सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में नौकरी के कारण गावं से पलायन कर गये हैं। कुछ लोग कृषि कार्य के साथ ही अन्य रोजगारपरक कार्यों में संलग्न हैं जिससे उन्हें अतिरिक्त आमदनी होती है। न्यादर्शों ने बताया कि कृषि के लिए उपलब्ध जमीन उपजाऊ है जिसमें विभिन्न प्रकार की फसलों का उत्पादन किया जाता है। 95 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा लोगों के स्वास्थ्य में सुधार आने के कारण रोजगारपरक कार्यों में उनकी भागीदारी बढ़ी है। 93 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार युवाओं में अपने गांव के प्रति मूलभूत सुविधाओं

के उपलब्ध होने के कारण लगाव बढ़ा है जिसके कारण वह गांव में ही रहकर रोजगार करना पसंद कर रहे हैं जिससे उनके पलायन दर में कमी आयी है। कुशल कामगार के रूप में युवा लोग गांव के आस–पास नौकरियां एवं स्व–रोजगार कर रहे हैं। युवाओं की भागीदारी कृषि एवं पशुपालन में भी वर्णित योजना के कारण बढ़ी है। छोटे–मोटे व्यवसायों के प्रति भी युवाओं में उन्मुखता देखी गयी है। कुल मिलाकर वर्णित योजना युवाओं के आत्मविश्वास को बढ़ाने में मददगार सिद्ध हुई है जिससे वह गांव में ही रहकर छोटे–मोटे व्यवसाय करके अपनी आजीविका चला रहे हैं।

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा नरायनपुर ग्राम के सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित किया गया है। ग्राम की शिक्षा एवं स्वास्थ्य व्यवस्था में आमूल–चूल बदलाव योजना द्वारा आया है। महिलाओं को सशक्त करने में भी योजना द्वारा सराहनीय कार्य किया गया है। लोगों की सोच में आधुनिक मूल्यों का समावेश करके सामाजिक व्यवस्था को स्थापित करने एवं सामाजिक न्याय की दिशा में भी बेहतर कार्य किया गया है। अवलोकन में पाया गया कि न्यादर्श में सम्मिलित सभी लोग योजना द्वारा कृत कार्य से प्रसन्न हैं। नल कनेक्शन की बेहतर अवसंरचनात्मक ढाँचा ग्राम नरायनपुर में विकसित की गयी है। प्रत्येक टोटी अच्छे ढंग से लगी है। नल से आने वाले स्वच्छ पेयजल का उपयोग गांव के सभी लोग कर रहे हैं। गांव में केवल जल के अपव्यय की समस्या देखी गयी क्योंकि कई लोग टोटी खुली छोड़ दे रहे हैं तो, कई लोग जानवरों को नहला–धुला रहे हैं तथा मोटर साइकिल एवं ट्रैक्टर आदि भी धो रहे हैं। कुछ लोग थोड़े–बहुत खेत

की सिंचाई भी इसी जल से कर रहे हैं। लोगों में जागरूकता लाकर जल के अपव्यय को रोका जा सकता है जिसके लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जा रहे हैं–

14.0 सुझाव

- ग्राम नरायनपुर के लोगों को पेयजल के उपभोग के प्रति संवेदनशील बनाकर उनमें चेतना एवं जागरूकता का विकास किया जाये।
- नरायनपुर ग्राम के लोग स्वच्छ पेयजल की उपयोगिता एवं उपादेयता को समझें, इसके लिए उन्हें जागरूक करने की आवश्यकता है।
- समाज कार्य हस्तक्षेप द्वारा लोगों के व्यवहार परिवर्तन में सहायता मिल सकती है जिससे वह जल संरक्षण के प्रति प्रेरित हो सकते हैं।
- बुंदेलखण्ड क्षेत्र में जल संरक्षण के क्षेत्र में कार्य करने वाले गैर–सरकारी संगठनों से नरायनपुर ग्राम में जल संरक्षण के प्रति जागरूकता लाने के लिए अनुरोध किया जा सकता है या उन्हें शासकीय वित्त उपलब्ध कराकर उनके कार्य विस्तार को नरायनपुर ग्राम तक किये जाने का प्रयास किया जा सकता है।
- पंचायत सदस्यों एवं फ्रंट लाइन वर्कर के सहयोग से भी जागरूकता कार्यक्रमों को संचालित किया जा सकता है।
- जिन भी गांवों में पेयजल का अपव्यय हो रहा है अथवा लोग उसका उपभोग नहीं कर रहे हैं, ऐसे गांवों में अनिवार्य रूप से जागरूकता कार्यक्रमों को संचालित करके लोगों के व्यवहार में परिवर्तन किये जाने की आवश्यकता है जिससे कि

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के और बेहतर परिणाम प्राप्त हो सकें और योजना सार्थक रूप से अपनी भूमिका निभा सके।

ग्राम मझीवा सानी, विकास खण्ड बिसण्डा, जनपद बाँदा

प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्र में निवासित प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 2019 से संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना का ग्राम मझीवा सानी, विकास खण्ड बिसण्डा, जनपद बाँदा में रहने वाले लोगों के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

1.0 अध्ययन की विधि

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सर्वप्रथम ग्राम मझीवा सानी, विकास खण्ड बिसण्डा, जनपद बाँदा की कुल जनसंख्या, ग्राम में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्रीमती शिव कुमारी से ग्राम मझीवा सानी की समग्रता के संदर्भ में बात किया गया। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों एवं पूर्व ग्राम प्रधान श्री बारेलाल श्रीवास से भी बात करके मझीवा सानी ग्राम की मूलभूत समस्याओं एवं उपलब्ध भौतिक संसाधनों तथा वर्णित योजना के प्रभाव के संदर्भ में जानकारी प्राप्त किया गया। इसके अतिरिक्त ग्राम मझीवा सानी में संचालित विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों तथा विद्यालय में नामांकित विद्यार्थियों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, ड्राप आउट की दर, विद्यालय में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं,

विद्यालय में नल संयोजन की स्थिति आदि की जानकारी प्राप्त की गई। ग्राम में संचालित आंगनबाड़ी केन्द्र की कार्यकत्री एवं स्वास्थ्य केन्द्र की ए.एन.एम. से भी बात करके गर्भवती

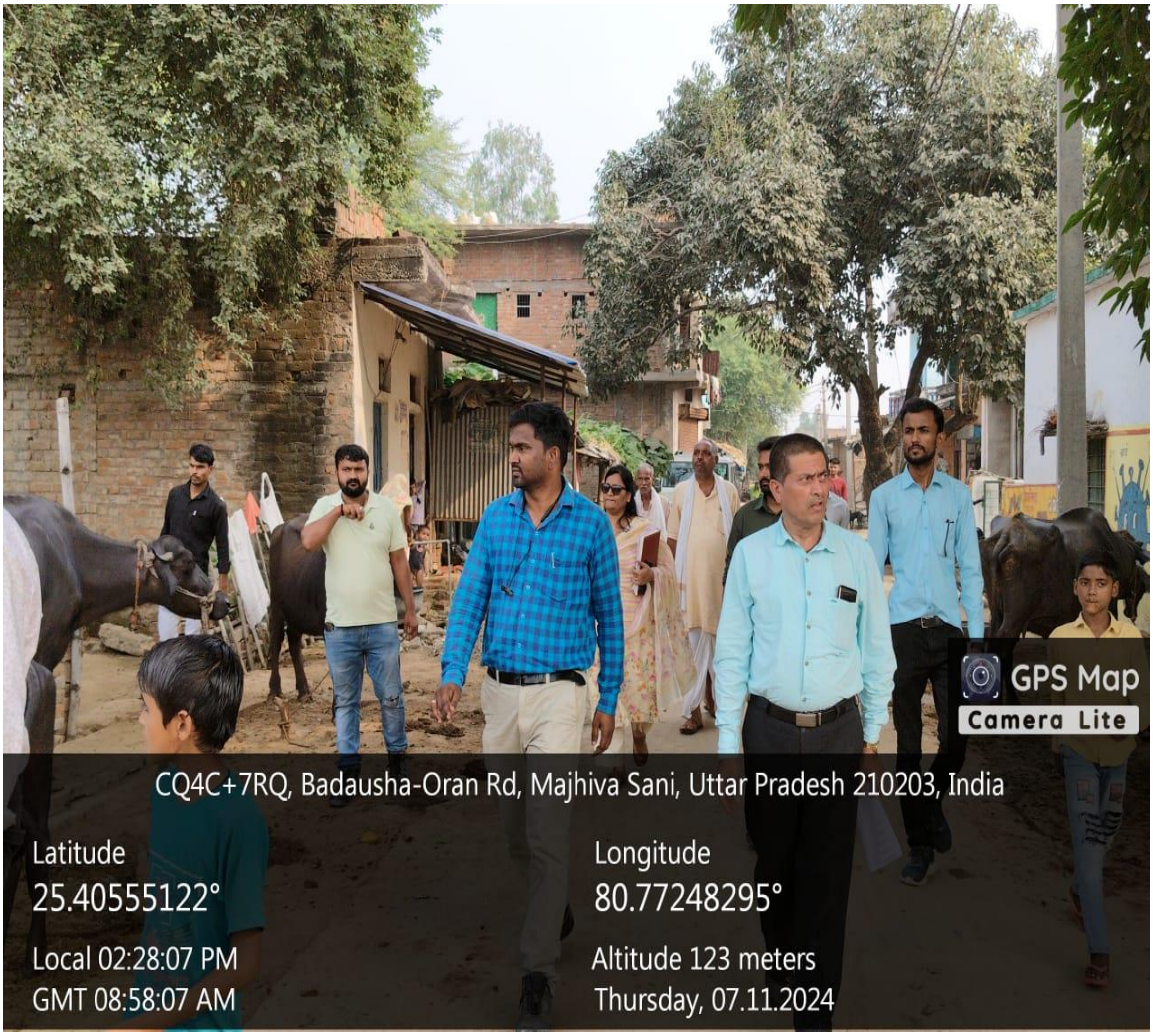

महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं एवं शिशुओं के स्वास्थ्य के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके पश्चात् न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों से घर–घर जाकर प्रत्यक्ष रूप से संपर्क स्थापित करके ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के पश्चात् उनके जीवन में आये बदलावों के संदर्भ में जानकारी एकत्रित की गयी तथा वर्णित योजना द्वारा ग्रामीण लोगों के जीवन स्तर में आये बदलावों का अवलोकन किया गया।

2.0 जनसंख्या एवं नल संयोजन की स्थिति

ग्राम मझीवा सानी की कुल आबादी–7000 है एवं कुल परिवारों की संख्या–1600 तथा मतदाताओं की संख्या–4000 है। ग्राम मझीवा सानी में नल कनेक्शन स्कोप–760 है जिसके सापेक्ष केवल 725 नल कनेक्शन दिये गये हैं। गांव से जीवकोपार्जन हेतु पलायन

कर गये परिवारों तथा नल कनेक्शन लेने के अनिच्छुक परिवारों को छोड़कर ग्राम में निवासित सभी परिवारों को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त करते हुए नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। अवलोकन में पाया गया कि नल संयोजन की बेहतर अवसंरचना मझीवा सानी ग्राम में है।

3.0 कृषि की स्थिति एवं आय के स्त्रोत

ग्राम प्रधान एवं अन्य पंचायत सदस्यों से प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम मझीवा सानी में कुल लगभग 7200 बीघा जमीन उपलब्ध है जिसमें से लगभग 80 प्रतिशत उपजाऊ है जिसमें जल गहन फसलों को छोड़कर सभी प्रकार की फसलों का उत्पादन किया जाता है। प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम मझीवा सानी में निवासित लोगों की आय का मुख्य साधन कृषि, पशुपालन तथा मजदूरी है क्योंकि अधिकांश आबादी की आजीविका कृषि, पशुपालन एवं मजदूरी पर ही निर्भर है। ग्राम के कुछ लोग जीवकोपार्जन की चाहत में बड़े शहरों/महानगरों में रह रहे हैं। कुछ लोग कृषि कार्य के साथ–साथ छोटे–मोटे रोजगार भी कर रहे हैं जिससे उन्हें अतिरिक्त आमदनी हो रही है।

4.0 ग्राम में विद्यालय की स्थिति

ग्राम मझीवा सानी में एक प्राथमिक एवं एक उच्च प्राथमिक विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है। प्राथमिक विद्यालय में कुल 305 विद्यार्थी एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय में कुल 200 विद्यार्थी नामांकित हैं। प्रधानाचार्य श्री राजाराम के अनुसार प्राथमिक विद्यालय को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से पूर्णतः संतृप्त किया जा चुका है। उच्च प्राथमिक विद्यालय भी वर्णित योजना से पूर्णतः संतृप्त है। दोनों विद्यालयों में सभी मूलभूत सुविधायें उपलब्ध हैं। विद्यालय में शौचालय की सुविधा भी उपलब्ध है जिसका प्रयोग बच्चे नियमित रूप से कर रहे हैं। विद्यालय में पठन–पाठन का अच्छा माहौल है।

विद्यालय में नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। उक्त दोनों विद्यालयों में पर्याप्त शिक्षक नियोजित हैं।

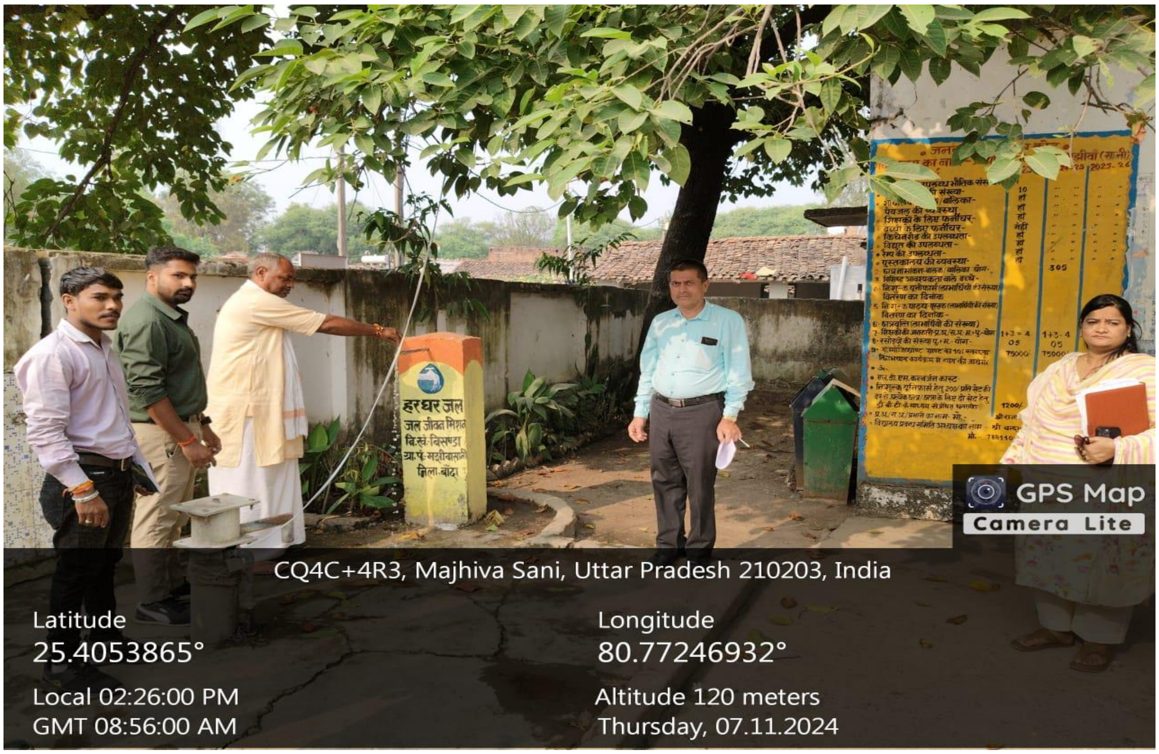

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

5.0 निदर्श निर्धारण

निदर्श की इकाइयों के निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। मझीवा सानी ग्राम की कुल जनसंख्या 7000 के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार से 7000/10 = 700 न्यादर्शों को प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित किया गया है जिसमें 350 महिला एवं 350 पुरूष सम्मिलित

हैं। अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्श की इकाइयों से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा उनके जीवन–स्तर में आये बदलावों के संदर्भ में जानकारी एकत्रित की गयी है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत अध्ययन में मझीवा सानी ग्राम से संबद्ध हितधारकों से भी वर्णित योजना द्वारा आये बदलावों के संदर्भ में परिचर्चा किया गया है।

6.0 समाविष्ट के मानदण्ड

मझीवा सानी ग्राम में केन्द्र सरकार द्वारा संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' द्वारा लोगों के जीवन स्तर में आये परिवर्तनों के मूल्यांकन हेतु ग्राम की सम्पूर्ण जनसंख्या के 1/10 वें भाग के साथ ही, ग्राम से संबद्ध हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

7.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसी इकाई को न्यादर्श एवं हितधारकों के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है, जो कि मझीवा सानी ग्राम से सम्बद्ध और वर्णित योजना के लाभार्थी नहीं थे।

8.0 परिणाम एवं चर्चा

ग्राम मझीवा सानी विकास खण्ड बिसण्डा, जनपद बाँदा का सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन के आधार पर ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना द्वारा लोगों की

जीवन–स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श की इकाइयों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण वस्तुनिष्ठ एवं निष्पक्ष रूप से करते हुए निष्कर्ष निकाले गये हैं, जो कि निम्नलिखित हैं–

8.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

प्रस्तुत अध्ययन के इस खण्ड में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा ग्राम मझीवा सानी में महिलाओं के जीवन स्तर में आये परिवर्तन का अध्ययन करने के लिए कुल 350 (कुल न्यादर्शों का 50 प्रतिशत) महिलाओं से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार हैं– उत्तरदाताओं के रूप में सम्मिलित सभी 100 प्रतिशत महिला इकाइयों ने स्वीकार कि वर्णित योजना के संचालन के कारण पेट संबंधी बीमारियों में कमी आने के कारण महिलाओं के स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है। न्यादर्श में सम्मिलित 98 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के पश्चात् महिलाओं के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार आया है। 100 प्रतिशत महिला इकाइयों के अनुसार जल–जनित बीमारियों के कम होने से इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है जिससे महिलाओं के पास धन की बचत हुई है। 95 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि अब जल संग्रह पर लगने वाले समय की भी बचत हुई है जिसका उपयोग वह बच्चों की देखभाल एवं परिवार की जरूरतों को पूर्ण करने में कर रही हैं जिससे उनका सम्मान परिवार में बढ़ा है। परिवार में महिलाओं की भूमिका बढ़ने के कारण घर में खुशहाली आयी है। 97 प्रतिशत

महिला न्यादर्शों ने बताया कि जल की उपलब्धता के कारण शौचालयों के कार्यात्मक होने से उनके सम्मान एवं सुरक्षा में वृद्धि हुई है। न्यादर्श में सम्मिलित 95 प्रतिशत महिला

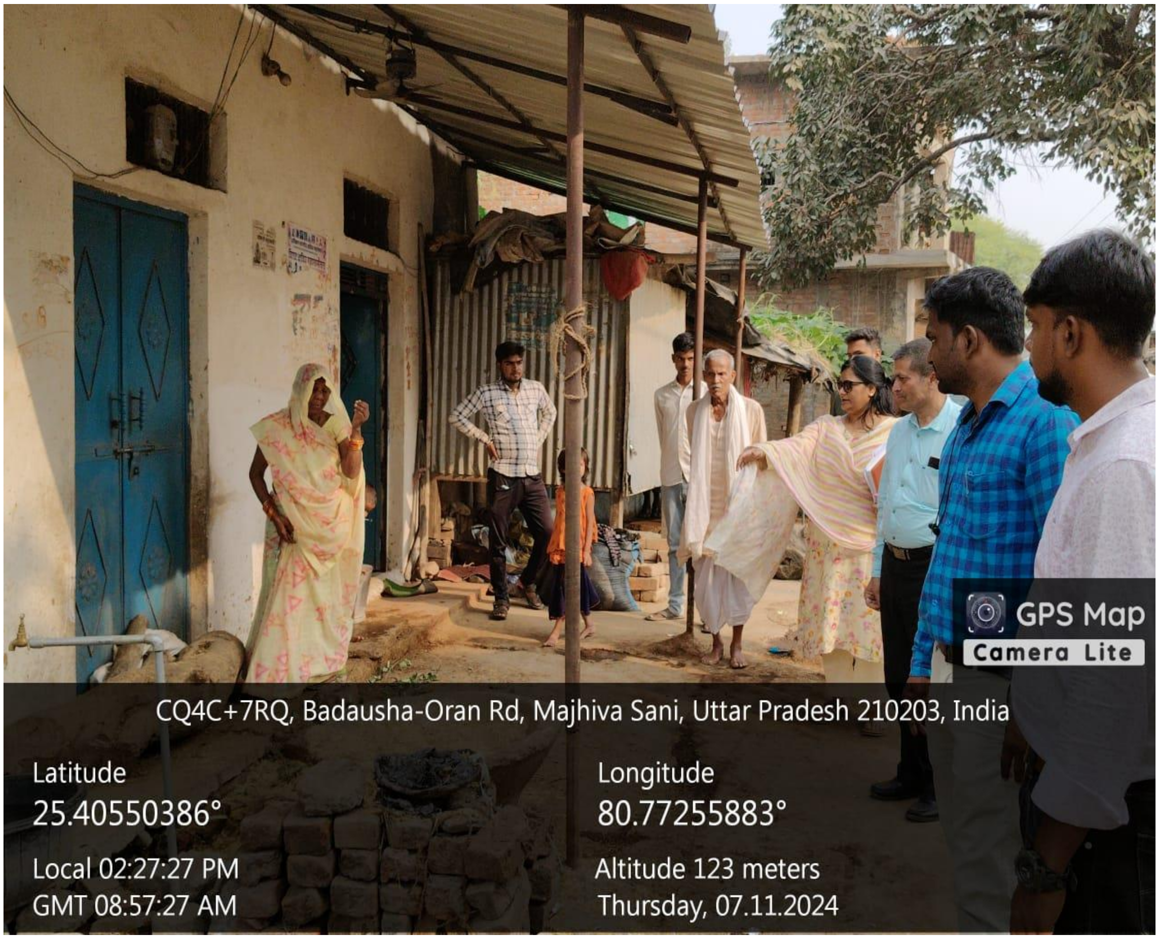

उत्तरदाताओं के अनुसार कृषि एवं पशुपालन तथा रोजगारपरक कार्यों में महिलाओं की भूमिका बढ़ी है। अवलोकन में पाया गया कि महिलाओं के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार आने के कारण उनके जीवन में खुशहाली आयी है। महिलाओं की भागीदारी श्रम बल में बढ़ी है जिसके कारण वह दैनिक खर्चों को चलाने में सक्षम हुई हैं। इस प्रकार से वर्णित योजना महिलाओं का समग्र विकास करते हुए उन्हें खुशहाल बनाया है और उनके आत्मसम्मान को भी उच्च किया है।

8.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा शिक्षा की स्थिति को बेहतर करने में मदद मिली है। ग्राम मझीवा सानी में एक प्राथमिक एवं एक उच्च प्राथमिक विद्यालय

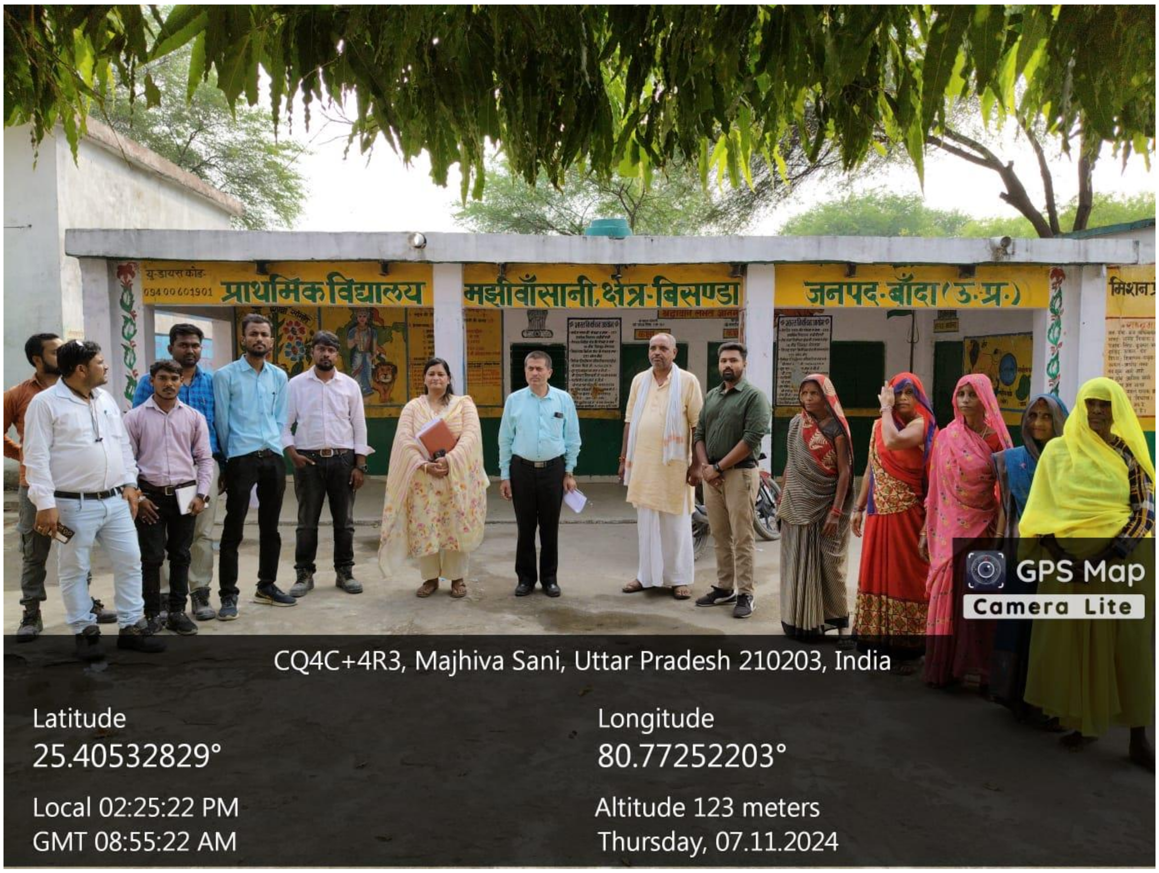

सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है जिसमें क्रमशः 305 एवं 200 बच्चे नामांकित हैं। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के बाद से बच्चों के सकल नामांकन में वृद्धि देखी गयी है और बच्चों के ड्राप आउट की दर में भी कमी आयी है। उच्च प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य ने बताया कि अब बच्चे नियमित रूप से विद्यालय आ रहे हैं और पूरे समय रूककर पढ़ाई भी कर रहे हैं। न्यादर्श में सम्मिलित लोगों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना

के कारण गांव के लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूकता आयी है जिससे बच्चों की शिक्षा में सुधार देखा गया है। 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा होने के कारण वह घर पर भी नियमित रूप से अध्ययन कर रहे हैं।

8.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा लोगों के स्वास्थ्य को उन्नत करने में भी बेहतर प्रयास किया गया है। अध्ययन की 100 प्रतिशत इकाइयों ने बताया कि स्वच्छ

पेयजल की उपलब्धता के कारण जल–जनित एवं पेट संबंधी बीमारियों में अधिक कमी आयी है। 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार लोगों के स्वास्थ्य में ''हर घर नल–हर

घर जल'' योजना द्वारा सुधार होने के कारण इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है जिसके कारण उन्हें कर्ज जाल में फंसने से मुक्ति मिली है। अध्ययन में सम्मिलित 97 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि लोगों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार आने के कारण उनकी कार्यात्मक क्षमता में सुधार आया है। ए.एन.एम. श्रीमती ऊषा साहू ने बताया कि जब से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हुआ है तक से पेट संबंधी एवं जल–जनित बीमारियों में कमी आयी है जिससे लोगों का स्वास्थ्य स्तर उच्च होने के साथ ही उनका जीवन–स्तर भी उच्च हुआ है। शौचालय की सुविधा उपलब्ध होने से संक्रामक बीमारियों में भी कमी आयी है क्योंकि अब जल उपलब्धता के कारण लगभग सभी शौचालय कार्यात्मक हो गये हैं।

8.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा सामाजिक व्यवहार के संदर्भ में बात करने पर अध्ययन में सम्मिलित बहुसंख्यक 100 प्रतिशत लोगों ने बताया कि वर्णित योजना के संचालन के पूर्व गांव के सभी लोगों को स्वच्छ पेयजल प्राप्त नहीं हो पाता था क्योंकि वह स्वच्छ पेयजल पर होने वाले खर्च को वहन करने में सक्षम नहीं थे। न्यादर्श में सम्मिलित लोगों ने बताया कि गांव के केवल अमीर एवं उच्च जाति के लोगों को ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता, वर्णित योजना के संचालन से पूर्व थी। अध्ययन में सम्मिलित 96 प्रतिशत न्यादर्श की इकाइयों ने बताया कि जल संकट का समाधान होने से जल प्राप्ति को लेकर होने वाले झगड़ों पर अंकुश लगा है। 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं

के अनुसार अब गांव में सहकार एवं सहयोग का भाव लोगों में विकिसत हुआ है। स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता से लोगों के स्वास्थ्य में सुधार आया है जिससे उनकी सोच में भी

परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है। 96 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने गांव में सामाजिक एकता को स्थापित करने में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्शों से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा शादी–विवाह के मामले में आये परिवर्तनों के संदर्भ में बात करने पर 92 प्रतिशत न्यादर्श की इकाइयों ने बताया अब शादी–विवाह में दिखावा अधिक हो रहा है जिसके कारण खर्चों में बढ़ोत्तरी हुई है। इलाज पर खर्च होने वाले धन की बचत एवं रोजगार के बेहतर विकल्पों के कारण शादी–विवाह में अधिक खर्च किया जा रहा है। रहन–सहन का स्तर

उच्च होने के कारण वर एवं वधू को अपनी पसंद की शादी करने की अधिक स्वतंत्रता मिली है। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है वर्णित योजना द्वारा सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहन मिला है जिसके कारण ग्राम मझीवा सानी में शांति एवं खुशहाली आयी है।

8.5 रोजगार के अवसर

''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा रोजगार के क्षेत्र में आये परिवर्तनों के संदर्भ में चर्चा करने पर न्यादर्श में सम्मिलित

100 प्रतिशत इकाइयों ने बताया कि ग्राम मझीवा सानी में अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि, पशुपालन एवं मजदूरी है। गांव के कुछ लोग जीवकोपार्जन के कारण शहरों में

पलायन कर गये हैं। गांव में कुछ लोग कृषि कार्य के साथ ही अन्य रोजगारपरक कार्यों में संलग्न हैं जिससे उन्हें अतिरिक्त आमदनी हो रही है। रोजगार सेवक के अनुसार मनरेगा में युवाओं द्वारा काम की मांग बढ़ी है क्योंकि अब अधिकतर युवा अपने गांव में ही रहना पसंद कर रहे हैं जिससे युवाओं के पलायन पर भी रोक लगी है। जमीन उपजाऊ होने के कारण कृषि कार्यों में भी युवाओं एवं महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। कुशल कामगार के रूप में युवाओं द्वारा गांव के आस–पास छोटे–मोटे व्यवसाय भी किये जा रहे हैं। कुल मिलाकर वर्णित योजना युवाओं के आत्मविश्वास को बढ़ाने में मददगार सिद्ध हुई है जिससे वह गांव में ही रहकर छोटे–मोटे व्यवसाय करके अपनी आजीविका चला रहे हैं। यह कहना समीचीन होगा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा युवाओं के पलायन दर को कम करके ग्राम मझीवा सानी की जनांकिकी को संरक्षित किया गया है। युवाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि आने के कारण उनका लगाव गांव के प्रति बढ़ा है। गांव में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं के उपलब्ध होने के कारण भी युवाओं में अपने गांव के प्रति आकर्षण बढ़ा है।

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा ग्राम मझीवा सानी की शिक्षा एवं स्वास्थ्य के स्तर को उन्नत करने में अमूल्य योगदान दिया गया है। लोगों के स्वास्थ्य में सुधार आने के कारण उनका समग्र विकास संभव हुआ है। महिला सशक्तिकरण में भी वर्णित योजना की भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। गांव में सामाजिक एकता को स्थापित करके शांति स्थापित करने में भी योजना की भूमिका सराहनीय रही है। उपर्युक्त से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना अपने

लक्ष्यों को प्राप्त करने के बहुत हद तक सफल रही है। ग्राम में नल कनेक्शन की स्थिति बेहतर है, केवल जल के अपव्यय को रोकने के लिए प्रयास करने की जरूरत है।

9.0 सुझाव

- लोगों को पेयजल महत्त्व के प्रति शिक्षित एवं जागरूक किया जाना चाहिए।
- जल के उपभोग के प्रति लोगों को संवेदनशील बनाकर उनमें चेतना एवं जागरूकता का विकास किया जाये।
- स्वच्छ पेयजल का स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयोगिता एवं उपादेयता को समझाने के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाने की आवश्यकता है।
- समाज कार्य हस्तक्षेप द्वारा लोगों के व्यवहार परिवर्तन में सहायता मिल सकती है जिससे वह जल संरक्षण के प्रति प्रेरित हो सकते हैं।
- जल संरक्षण के क्षेत्र में कार्य करने वाले गैर–सरकारी संगठनों का सहयोग लिया जाना चाहिए।
- योजना की सार्थकता इसी में है कि लोग जल के महत्त्व को समझें और उसका उपयोग करते हुए संरक्षण करें।

ग्राम जखनी, विकास खण्ड महुआ, जनपद बाँदा

प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्र में निवासित प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 2019 से संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना का ग्राम जखनी, विकास खण्ड महुआ, जनपद बाँदा में रहने वाले लोगों के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

1.0 अध्ययन की विधि

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सर्वप्रथम ग्राम जखनी, विकास खण्ड महुआ, जनपद बाँदा की कुल जनसंख्या, ग्राम में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्री सुरेश कुमार से ग्राम जखनी की समग्रता के संदर्भ में बात किया गया। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों एवं पूर्व ग्राम प्रधान श्री राजकिशोर पाण्डेय से भी बात करके जखनी ग्राम की मूलभूत समस्याओं एवं उपलब्ध भौतिक संसाधनों तथा वर्णित योजना के प्रभाव के संदर्भ में जानकारी प्राप्त किया गया। इसके अतिरिक्त ग्राम जखनी में संचालित विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों तथा विद्यालय में नामांकित विद्यार्थियों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, ड्राप आउट की दर, विद्यालय में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं, विद्यालय में नल

संयोजन की स्थिति आदि की जानकारी प्राप्त की गई। ग्राम में स्थित स्वास्थ्य केन्द्र की ए.एन.एम. से भी बात करके गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं एवं शिशुओं

के स्वास्थ्य के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके पश्चात् न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों से घर–घर जाकर प्रत्यक्ष रूप से संपर्क स्थापित करके ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के पश्चात् उनके जीवन में आये बदलावों के संदर्भ में जानकारी एकत्रित की गयी तथा वर्णित योजना द्वारा ग्रामीण लोगों के जीवन स्तर में आये बदलावों का अवलोकन किया गया। ग्राम में आंगनबाड़ी केन्द्र का अभाव पाया गया।

2.0 जनसंख्या एवं नल संयोजन की स्थिति

ग्राम प्रधान श्री सुरेश कुमार ने बताया कि ग्राम जखनी की कुल आबादी–6000 है एवं कुल परिवारों की संख्या–480 तथा मतदाताओं की संख्या–1621 है। ग्राम जखनी में नल कनेक्शन स्कोप–295 है जिसके सापेक्ष 295 नल कनेक्शन देने के साथ ही 25 नल कनेक्शन अतिरिक्त भी दिये गये हैं। ग्राम में निवासित सभी परिवारों को ''हर घर

नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त करते हुए नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। अवलोकन में पाया गया कि गांव में लगी टोटियां बेहतर स्थिति में हैं।

3.0 कृषि की स्थिति एवं आय के स्त्रोत

ग्राम प्रधान एवं अन्य पंचायत सदस्यों से प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम जखनी में कुल लगभग 1500 बीघा जमीन उपलब्ध है जो 100 प्रतिशत उपजाऊ है, जिसमें जल गहन फसलों को छोड़कर सभी प्रकार की फसलों का उत्पादन किया जाता है। हितधारकों एवं न्यादर्श में सम्मिलित उत्तरदाताओं से प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम जखनी में निवासित लोगों की आय का मुख्य साधन कृषि है क्योंकि गांव की अधिकांश आबादी की आजीविका कृषि पर ही आधारित है। ग्राम के कुछ लोग जीवकोपार्जन के कारण बड़े शहरों/महानगरों में पलायन कर गये हैं। कुछ लोग कृषि कार्य के साथ–साथ छोटे–मोटे व्यवसाय भी कर रहे हैं जिससे उन्हें अतिरिक्त आमदनी हो रही है।

4.0 ग्राम में विद्यालय की स्थिति

ग्राम जखनी में एक प्राथमिक एवं दो उच्च प्राथमिक विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है। प्राथमिक विद्यालय में कुल 162 विद्यार्थी एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कुल 136 विद्यार्थी नामांकित हैं। प्राथमिक विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती लीला गुप्ता ने बताया कि प्राथमिक विद्यालय को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से पूर्णतः संतृप्त किया जा चुका है जिससे नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति हो रही है। दोनों उच्च प्राथमिक विद्यालय भी वर्णित योजना से पूर्णतः संतृप्त है जिससे उनमें भी स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। ग्राम में स्थित सभी विद्यालयों में शौचालय की सुविधा भी उपलब्ध है जिसका प्रयोग बच्चे नियमित रूप से कर रहे हैं।

सभी विद्यालयों में पठन–पाठन का अच्छा माहौल है जिससे विद्यालय में पर्याप्त बच्चे पढ़ने के लिए आते हैं।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

5.0 निदर्श निर्धारण

निदर्श की इकाइयों के निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। जखनी ग्राम की कुल जनसंख्या 6000 के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार से 6000/10 = 600 न्यादर्शों को प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित किया गया है जिसमें 300 महिला एवं 300 पुरूष सम्मिलित हैं। अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्श की इकाइयों से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा उनके जीवन–स्तर में आये बदलावों के संदर्भ में जानकारी एकत्रित की गयी है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत अध्ययन में जखनी ग्राम से संबद्ध हितधारकों से भी वर्णित योजना द्वारा आये बदलावों के संदर्भ में परिचर्चा किया गया है।

6.0 समाविष्ट के मानदण्ड

जखनी ग्राम में केन्द्र सरकार द्वारा संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' द्वारा लोगों के जीवन स्तर में आये परिवर्तनों के मूल्यांकन हेतु ग्राम की सम्पूर्ण

जनसंख्या के 1/10 वें भाग के साथ ही, ग्राम से संबद्ध हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

7.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसी इकाई को न्यादर्श एवं हितधारकों के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है, जो कि जखनी ग्राम से सम्बद्ध और वर्णित योजना के लाभार्थी नहीं थे।

8.0 परिणाम एवं चर्चा

ग्राम जखनी विकास खण्ड महुआ, जनपद बाँदा का सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन के आधार पर ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना द्वारा लोगों की जीवन–स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श की इकाइयों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण वस्तुनिष्ठ एवं निष्पक्ष रूप से करते हुए निष्कर्ष निकाले गये हैं, जो कि निम्नलिखित हैं–

8.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा ग्राम जखनी में महिलाओं के जीवन स्तर में आये बदलावों का अध्ययन करने के लिए कुल 300 (कुल न्यादर्शों का 50

प्रतिशत) महिला न्यादर्शों से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार हैं—

अध्ययन में सम्मिलित सभी 100 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल—हर घर जल'' योजना के संचानल के बाद से महिलाओं के समग्र स्वास्थ्य में सुधार

आया है। 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि दूषित पेयजल से निर्भरता हटने के कारण उनके पेट संबंधी एवं जल—जनित बीमारियों में कमी आयी है। न्यादर्श में सम्मिलित 95 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि ''हर घर नल—हर घर जल'' योजना लागू होने के पश्चात् महिलाओं के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में गुणात्मक सुधार आया है जिससे उनकी कार्य क्षमता एवं प्रदर्शन में सुधार हुआ है। अध्ययन में सम्मिलित 97 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने कहा कि बीमारियों के कम होने से इलाज पर होने वाले खर्च में कमी

आयी है। 95 प्रतिशत के अनुसार घर में ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण समय की बचत होने से वह इसका प्रयोग बच्चों की देखभाल एवं रोजगारपरक कार्यों में कर रही हैं जिससे बच्चों का पालन–पोषण अच्छे से हो रहा है और उनकी आमदनी में भी वृद्धि हुई है। 94 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि वर्णित योजना के कारण महिलाओं का सम्मान परिवार में बढ़ा है। श्रम बल में भागीदारी के कारण महिलाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है। 93 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के कारण महिलाओं में आत्मनिर्भरता आयी है। अध्ययन की 100 प्रतिशत इकाइयों ने बताया कि जल की उपलब्धता के कारण शौचालयों के कार्यात्मक होने से वह उसका नियमित रूप से उपयोग कर रही हैं जिससे उनके सम्मान एवं सुरक्षा में वृद्धि होने के साथ ही बीमारियों पर भी अंकुश लगा है।

8.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने ग्राम जखनी में शैक्षिक जागरूकता लाने में सहायता की है। ग्राम जखनी में एक प्राथमिक एवं दो उच्च प्राथमिक विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है जिसमें क्रमशः 162 एवं 136 विद्यार्थी नामांकित हैं। सभी विद्यालय ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त हैं जिससे उनमें नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्या श्रीमती लीला माहुले के अनुसार वर्णित योजना के संचालन के बाद से विद्यालय में विद्यार्थियों के नामांकन दर में सुधार आया है। और बच्चों के ड्राप आउट की दर कम हुई है। उच्च

प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री समीर गुप्ता ने बताया कि विद्यालय में बच्चों के नामांकन दर में सुधार आने के साथ ही बच्चे नियमित रूप से विद्यालय आ रहे हैं, प्रधानाचार्य ने बताया कि बच्चों की बोध क्षमता में सुधार देखा गया है। उत्तरदाताओं से परिचर्चा में 95 प्रतिशत ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा गांव के लोग शिक्षा के प्रति जागरूक हुये हैं और शिक्षा पर धन का अधिक निवेश भी कर रहे हैं। अब समय से बच्चों को तैयार करके विद्यालय भेजा जा रहा है और बच्चे पूरे समय तक विद्यालय में रूक कर पढ़ाई भी कर रहे हैं।

8.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन विधि पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित

100 प्रतिशत न्यादर्श की इकाइयों ने बताया कि स्वच्छ पेयजल के उपलब्ध होने से दूषित

जल से होने वाली बीमारियों में बहुत कमी आयी है जिससे लोगों का स्वास्थ्य बेहतर हुआ है। अध्ययन में सम्मिलित 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार लोगों के स्वास्थ्य में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा सुधार होने के कारण इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है जिसके कारण उन्हें कर्ज जाल में फँसने से मुक्ति मिली है। अध्ययन की 100 प्रतिशत इकाइयों ने बताया कि ग्राम में निवासित लोगों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार आया है। स्वास्थ्य केन्द की ए.एन.एम. श्रीमती शक्ति श्रीवास्तव ने बताया कि योजना के कारण गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं एवं बच्चों तथा वृद्धों के स्वास्थ्य में अधिक सुधार देखा गया है। 100 प्रतिशत न्यादर्श की इकाइयों ने बताया कि शौचालय की सुविधा उपलब्ध होने से सभी लोगों द्वारा उसका प्रयोग नियमित रूप से किया जा रहा है जिसके कारण मक्खियों द्वारा होने वाली बीमारियों में कमी आयी है।

8.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा सामाजिक व्यवहार के संदर्भ में बात करने पर अध्ययन में सम्मिलित बहुसंख्यक 100 प्रतिशत लोगों ने बताया कि वर्णित योजना के संचालन के पूर्व गांव के सभी लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध नहीं था क्योंकि उनकी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि वह स्वच्छ पेयजल पर होने वाले खर्च को वहन कर सकें। न्यादर्शों में सम्मिलित लोगों ने बताया कि गांव के केवल अमीर एवं उच्च जाति के लोगों को ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता, वर्णित योजना के संचालन

से पूर्व थी। अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत लोगों ने बताया कि वर्णित योजना के कारण अब प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो सका है। अब गांव के सभी परिवारों को स्वच्छ पेयजल की नियमित रूप से आपूर्ति की जा रही है। 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि जल संकट का समाधान होने से जल प्राप्ति को लेकर होने वाले झगड़ों में कमी आयी है। अब गांव के लोग शांति से रह रहे हैं। 94 प्रतिशत अध्ययन

की इकाइयों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से गांव में खुशहाली आयी है, लोगों में अपनेपन का विकास हुआ है और वह सह–अस्तित्त्व की भावना के साथ रह रहे हैं। उत्तरदाताओं से शादी–विवाह के मामले में आये परिवर्तनों के संदर्भ में चर्चा करने पर 96 प्रतिशत लोगों ने बताया कि अब बाल–विवाह में कमी आयी है और दहेज की समस्या भी कम देखने को मिल रही है, यद्यपि कि वैवाहिक कार्यक्रमों में होने

वाले खर्च में बढ़ोत्तरी हुई है। लोगों के पास धन की बचत होने एवं जीवन–मूल्यों में परिवर्तन आने के कारण शादी–विवाह में दिखावा भी खूब हो रहा है।

8.5 रोजगार के अवसर

''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा रोजगार के क्षेत्र में आये परिवर्तनों के संदर्भ में चर्चा करने पर न्यादर्श में सम्मिलित लोगों ने बताया कि ग्राम जखनी में लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत कृषि है। कुछ लोग मजदूरी तथा छोटे–मोटे व्यवसाय करके भी जीवन–यापन कर रहे हैं। गांव के कुछ लोग जीवकोपार्जन के कारण शहरों में पलायन कर गये हैं और वहीं रहकर अपनी जीविका चला रहे हैं, यदा–कदा अपने गांव भी आते रहते हैं। न्यादर्श में सम्मिलित 97 प्रतिशत लोगों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा लोगों स्वास्थ्य में सुधार एवं इलाज से होने वाली बीमारियों में कमी तथा समय की बचत के कारण युवाओं एवं महिलाओं तथा अन्य लोगों की भागीदारी कृषि तथा पशुपालन में बढ़ी है। गांव के कुछ युवा कुशल कामगार के रूप में निजी क्षेत्रों में भी आस–पास के कस्बों में जाकर नौकरी कर रहे हैं। स्वच्छ जल से युवाओं के स्वास्थ्य में सुधार आने के कारण वह गांव में ही रहकर स्व–रोजगार करने के प्रति उन्मुख हैं। अध्ययन में सम्मिलित 94 प्रतिशत लोगों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से युवाओं के पलायन की दर में कमी आयी है। रोजगार के विविध विकल्प गांव में ही उपलब्ध होने के कारण युवाओं के

आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है। मुर्गी पालन, मत्स्य पालन, डेयरी, मोबाइल शॉप, किराना की दूकान आदि रोजगारपरक कार्यों के प्रति युवाओं में अधिक उन्मुखता देखी गयी।

''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा ग्राम जखनी, विकास खण्ड महुआ, जनपद बाँदा का समग्र विकास हुआ है। लोगों के जीवन–स्तर में सुधार आया है, उनके रहन–सहन का स्तर उच्च हुआ है। सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन विधि पर आधारित अध्ययन में इस तथ्य की पुष्टि होती है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ग्राम जखनी में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल रही है। योजना द्वारा कृत कार्य से लोगों में संतुष्टि का भाव है। बहु–आयामी लक्ष्यों को प्रेरित यह योजना ग्राम में निवासित लोगों के विकास के लगभग सभी आयामों को आच्छादित करते हुए उनमें सकारात्मक परिवर्तन लायी है।

ग्राम जखनी में अवलोकन में पाया गया कि गांव में लगे हुए नल बेहतर स्थिति में हैं, लोग आपूर्ति किये जाने वाले जल का नियमित रूप से पेयजल के रूप में उपभोग भी कर रहे हैं लेकिन यह देखा गया कि गांव के लोग जल का अधिक अपव्यय कर रहे हैं क्योंकि गांव के लोग जल की उपयोगिता एवं उपादेयता को नहीं समझ रहे हैं जिसके कारण वह प्रकृति प्रदत्त जल का संरक्षण नहीं कर रहे हैं, इसलिए लोगों में जागरूकता लाने की आवश्यकता है जिसके लिए कुछ सुझाव यहां दिये गये हैं।

9.0 सुझाव

- ग्राम के लोगों को पेयजल के महत्त्व के प्रति शिक्षित एवं जागरूक किया जाना चाहिए।
- जल के उपभोग के प्रति लोगों को संवेदनशील बनाकर उनमें चेतना एवं जागरूकता का विकास किया जाये।
- स्वच्छ पेयजल का स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयोगिता एवं उपादेयता को समझाने के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाने की आवश्यकता है।
- समाज कार्य हस्तक्षेप द्वारा लोगों के व्यवहार परिवर्तन में सहायता मिल सकती है जिससे वह जल संरक्षण के प्रति प्रेरित हो सकते हैं।
- जल संरक्षण के क्षेत्र में कार्य करने वाले गैर–सरकारी संगठनों का सहयोग लिया जाना चाहिए।
- योजना की सार्थकता इसी में है कि लोग जल के महत्त्व को समझें और उसका उपयोग करते हुए संरक्षण करें जिसके लिए व्यापक स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम चलाने की जरूरत है।

ग्राम गोरेमऊ कलां, विकास खण्ड नरैनी, जनपद बाँदा

प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्र में निवासित प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 2019 से संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना का ग्राम गोरेमऊ कलां, विकास खण्ड नरैनी, जनपद बाँदा में रहने वाले लोगों के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

1.0 अध्ययन की विधि

सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन विधि पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन में सर्वप्रथम ग्राम गोरेमऊ कलां, विकास खण्ड नरैनी, जनपद बाँदा की कुल जनसंख्या, ग्राम में

परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्री राम

कृपाल पटेल से ग्राम गोरेमऊ कलां की समग्रता के संदर्भ में बात किया गया। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों से भी बात करके गोरेमऊ कलां ग्राम की मूलभूत समस्याओं एवं उपलब्ध भौतिक संसाधनों तथा वर्णित योजना के प्रभाव के संदर्भ में जानकारी प्राप्त किया गया। इसके अतिरिक्त ग्राम गोरेमऊ कलां में संचालित विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों तथा विद्यालय में नामांकित विद्यार्थियों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, ड्राप आउट की दर, विद्यालय में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं, विद्यालय में नल संयोजन की स्थिति आदि की जानकारी प्राप्त की

गई। ग्राम में स्थित आंगनबाड़ी केन्द की सहायिक श्रीमती रानी देवी एवं श्रीमती सुशीला देवी से बात करके गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं एवं शिशुओं के स्वास्थ्य के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके पश्चात् न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों से घर–घर जाकर प्रत्यक्ष रूप से संपर्क स्थापित करके ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के पश्चात् उनके जीवन में आये बदलावों के संदर्भ में जानकारी एकत्रित की गयी तथा वर्णित योजना द्वारा ग्रामीण लोगों के जीवन स्तर में आये बदलावों का अवलोकन किया गया। ग्राम में स्वास्थ्य केन्द्र का अभाव पाया गया।

2.0 जनसंख्या एवं नल संयोजन की स्थिति

ग्राम प्रधान श्री रामकृपाल पटेल ने बताया कि ग्राम गोरेमऊ कलां की कुल आबादी–1800 है एवं कुल परिवारों की संख्या लगभग–500 तथा मतदाताओं की संख्या–1000 है। ग्राम गोरेमऊ कलां में नल कनेक्शन स्कोप–154 है जिसके सापेक्ष 154

नल कनेक्शन प्रदान भी किये गये हैं। ग्राम में निवासित सभी परिवारों को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त करते हुए नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। अवलोकन में पाया गया कि गांव में लगी टोटियां बेहतर स्थिति में हैं।

3.0 कृषि की स्थिति एवं आय के स्त्रोत

हितधारकों से प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम गोरेमऊ कलां में कुल लगभग 1200 बीघा जमीन उपलब्ध है जो 100 प्रतिशत उपजाऊ है, जिसमें जल गहन फसलों को छोड़कर सभी प्रकार की फसलों का उत्पादन अधिक मात्रा में किया जाता है। प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम गोरेमऊ कलां में निवासित लोगों की आय का मुख्य साधन कृषि, मजदूरी एवं पशुपालन है। ग्राम के कुछ लोग जीवकोपार्जन के कारण बड़े शहरों/महानगरों में पलायन कर गये हैं। कुछ लोग कृषि कार्य के साथ–साथ छोटे–मोटे व्यवसाय भी कर रहे हैं जिससे उन्हें अतिरिक्त आमदनी हो रही है।

4.0 ग्राम में विद्यालय की स्थिति

ग्राम गोरेमऊ कलां में एक कम्पोजिट विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है। विद्यालय में कुल 60 विद्यार्थी जिसमें से 50 प्राथमिक एवं 10 उच्च प्राथमिक स्तर पर नामांकित हैं। कम्पोजिट विद्यालय के प्रधानाचार्य ने बताया कि विद्यालय को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से पूर्णतः संतृप्त किया जा चुका है जिससे नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति हो रही है। विद्यालय में शौचालय की सुविधा भी

उपलब्ध है जिसका प्रयोग बच्चे नियमित रूप से कर रहे हैं। कम्पोजिट विद्यालय में 03 शिक्षा मित्र भी नियोजित हैं। पठन–पाठन का अच्छा परिवेश विद्यालय में हैं। विद्यार्थियों के अनुपात में पर्याप्त शिक्षक विद्यालय में नियोजित हैं।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

5.0 निदर्श निर्धारण

निदर्श की इकाइयों के निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। गोरेमऊ कलां ग्राम की कुल जनसंख्या 1800 के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार से 1800/10 = 180 न्यादर्शों को प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित किया गया है जिसमें 90 महिला एवं 90 पुरूष सम्मिलित हैं। अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्श की इकाइयों से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा उनके जीवन–स्तर में आये बदलावों के संदर्भ में जानकारी एकत्रित की गयी है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत अध्ययन में गोरेमऊ कलां ग्राम से संबद्ध हितधारकों से भी वर्णित योजना द्वारा आये बदलावों के संदर्भ में परिचर्चा किया गया है।

6.0 समाविष्ट के मानदण्ड

गोरेमऊ कलां ग्राम में केन्द्र सरकार द्वारा संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' द्वारा लोगों के जीवन स्तर में आये परिवर्तनों के मूल्यांकन हेतु ग्राम की सम्पूर्ण

जनसंख्या के 1/10 वें भाग के साथ ही, ग्राम से संबद्ध हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

7.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी—भी ऐसी इकाई को न्यादर्श एवं हितधारकों के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है, जो कि गोरेमऊ कलां ग्राम से सम्बद्ध और वर्णित योजना के लाभार्थी नहीं थे।

8.0 परिणाम एवं चर्चा

ग्राम गोरेमऊ कलां विकास खण्ड नरैनी, जनपद बाँदा का सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन के आधार पर ''हर घर नल—हर घर जल'' परियोजना द्वारा लोगों की

जीवन–स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श की इकाइयों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण वस्तुनिष्ठ एवं निष्पक्ष रूप से करते हुए निष्कर्ष निकाले गये हैं, जो कि निम्नलिखित हैं–

8.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा ग्राम गोरेमऊ कलां में महिलाओं के जीवन स्तर में आये बदलावों का अध्ययन करने के लिए कुल 90 (कुल न्यादर्शों का 50 प्रतिशत) महिला न्यादर्शों से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार हैं–

अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन विधि पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा दूषित पेयजल से मुक्ति मिलने के कारण महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार आया है। 95 प्रतिशत महिलाओं के अनुसार बीमारियों में वर्णित योजना के कारण कमी आने से इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है जिससे धन की बचत हुई है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार प्रत्येक परिवार को जल की उपलब्धता से महिलाओं के समय में बचत हुयी है और उनका कार्य बोझ भी कम हुआ है। न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के पश्चात् महिलाओं के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सकारात्मक सुधार आया है। 98 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार समय की बचत होने के कारण वह बच्चों एवं परिवार की देखभाल पर पूर्व की

अपेक्षा अधिक समय दे रही हैं जिससे परिवार में उनका मान–सम्मान बढ़ा है। 93 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने माना कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के कारण श्रम बल में महिलाओं की भागीदारी में बढ़ोत्तरी हुई है जिसके कारण महिलायें आत्मनिर्भर एवं

स्वावलंबी हुई हैं। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार जल की उपलब्धता के कारण शौचालयों के कार्यात्मक होने से वह उनका नियमित रूप से शौच हेतु उपयोग कर रही हैं जिससे उनके सम्मान एवं सुरक्षा में वृद्धि होने के साथ ही बीमारियों में भी कमी आयी है।

8.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

ग्राम गोरेमऊ कलां में एक कम्पोजिट विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है जिसमें कुल 160 विद्यार्थी नामांकित हैं। विद्यालय में ''हर घर नल–हर घर जल''

योजना द्वारा नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। विद्यालय के प्रधानाचार्य के अनुसार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के बाद से बच्चों के नामांकन दर में सुधार आया है। बालिकाओं के संदर्भ में बात करने पर प्रधानाचार्य ने बताया कि गांव में शैक्षिक जागरूकता के कारण बालिकाओं के नामांकन दर में भी वृद्धि हुई है, साथ ही उनकी उपस्थिति की दर भी बढ़ी है। विद्यालय में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं के कारण बच्चों का आकर्षण विद्यालय के प्रति बढ़ा है जिसके कारण बच्चे नियमित रूप से विद्यालय आ रहे हैं। विद्यालय के शिक्षकों ने बताया कि बच्चों के सीखने की क्षमता में स्वास्थ्य में सुधार आने के कारण बढ़ोत्तरी हुई है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि गांव में शिक्षा के प्रति जागरूकता आने से साक्षरता दर में सुधार होने के साथ ही बच्चों की शिक्षा पर अधिक धन का निवेश किया जा रहा है। अब नियमित रूप से अभिभावक अपने बच्चों को विद्यालय समय से भेज रहे हैं। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि वर्णित योजना के कारण ग्राम गोरेमऊ कलां की शिक्षा में वृहद स्तर पर सुधार आया है।

8.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन विधि पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित कुल 180 न्यादर्शों में से 100 प्रतिशत न्यादर्श की इकाइयों ने बताया कि स्वच्छ पेयजल के उपलब्ध होने से दूषित जल के कारण होने वाली बीमारियों में बहुत कमी आयी है जिससे लोगों का स्वास्थ्य बेहतर हुआ है और इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी

है। अध्ययन में सम्मिलित 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ग्राम में निवासित लोगों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार आया है जिससे वह स्वयं को अधिक ऊर्जावान महसूस कर रहे हैं। 96 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार स्वास्थ्य में सुधार आने के कारण व्यावसायिक गतिविधियों में लोगों की भागीदारी बढ़ी है। न्यादर्श में सम्मिलित 96 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पूर्व माह में लगभग 13–15 दिन तक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था जिसके कारण उन्हें बहुत परेशानी होती थी, अब स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण उनका स्वास्थ्य अच्छा रह रहा है जिससे उत्पादक कार्यों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। 93 प्रतिशत

महिलाओं ने बताया कि दूषित पेयजल के कारण दिन में अनेक बार शौच हेतु जाना पड़ता था लेकिन अब स्वच्छ पेयजल की उलपब्धता के कारण दिन में अधिकतम दो बार

ही शौच हेतु जाना पड़ता है। शौचालयों के क्रियात्मक होने से महिलाओं के सम्मान एवं सुरक्षा में सुधार होने के साथ ही स्वच्छता में भी सुधार आया है।

8.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत लोगों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के पूर्व गांव के केवल समृद्ध एवं उच्च जाति के लोगों तक ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता थी, निम्न आय एवं जाति के लोग कुओं एवं तालाबों में

उपलब्ध जल से अपनी दैनिक क्रियाओं का संपादन करते थे। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि अब प्रत्येक परिवार को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हुआ है जिससे जल के कारण होने वाले झगड़ों में कमी आयी है। अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं ने बताया कि अब गांव में सामाजिक एकता स्थापित

हुई है, सहकार एवं सहयोग का भाव लोगों में आया है, लोगों में अपनेपन की भावना प्रबल हुई है। रहन–सहन का स्तर उच्च होने से लोगों की सोच में भी परिवर्तन आया है। लोगों में शैक्षिक जागरूकता आने के कारण उनकी सोच में लोकतांत्रिक मूल्यों का समावेश हुआ है। सोच में परिवर्तन आने के कारण शादी–विवाह के मामले में भी परिवर्तन आये हैं। 91 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि अब विवाह हेतु लड़के एवं लड़की की पसंद को अधिक प्राथमिकता दी जा रही है। जीवन–स्तर के उच्च होने के कारण परम्परागत वैवाहिक रीति–रिवाजों एवं कर्मकाण्डों के स्थान पर नवीन एवं आधुनिक रीति–रिवाज एवं कर्मकाण्ड अपनाये जा रहे हैं। अतएव यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन करते हुए न्यायपूर्ण समाज की स्थापना को बल मिला है तथा वैवाहिक मामलों में नवीन एवं आधुनिक मूल्यों को प्राख्यापित किया गया है।

8.5 रोजगार के अवसर

''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा रोजगार के क्षेत्र में आये परिवर्तनों के संदर्भ में चर्चा करने पर न्यादर्श में सम्मिलित लोगों ने बताया कि ग्राम गोरेमऊ कलां में लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत कृषि, पशुपालन एवं मजदूरी है। कुछ लोग कृषि के साथ ही छोटे–मोटे व्यवसाय करके भी अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। गांव में लगभग 1200 बीघा जमीन उपलब्ध है जिस पर अच्छी खेती होती है। 96 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना

द्वारा स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण युवा लोग गांव में रह कर खेती–किसानी के प्रति उन्मुख हो रहे हैं। न्यादर्श में सम्मिलित 94 प्रतिशत लोगों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा लोगों के स्वास्थ्य में सुधार एवं इलाज से होने वाली बीमारियों में कमी तथा समय की बचत के कारण युवाओं एवं महिलाओं की भागीदारी कृषि तथा पशुपालन में अधिक बढ़ी है। मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता गांव में होने के कारण युवाओं में गांव के प्रति लगाव बढ़ा है जिसके कारण वह अपने गांव में रहकर रोजगार करना पसंद कर रहे हैं। 92 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार वर्णित योजना के कारण युवाओं के पलायन दर में कमी आयी है और उनका आत्म–विश्वास बढ़ा है। छोटे–मोटे रोजगार जैसे– मुर्गी पालन, मत्स्य पालन, डेयरी, मोबाइल शॉप, किराना की दूकान आदि रोजगारपरक कार्यों के प्रति युवाओं में अधिक उन्मुखता देखी गयी है। इससे यह सिद्ध होता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने रोजगार के क्षेत्र को व्यापक रूप से प्रभावति करते हुए लोगों के रहन–सहन में सुधार किया है।

सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन विधि पर आधारित अध्ययन में इस तथ्य की पुष्टि होती है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ग्राम गोरेमऊ कलां, विकास खण्ड नरैनी, जनपद बाँदा में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल रही है। यह योजना लोगों की खुशहाली का प्रतीक बनी हुई है। वर्णित योजना द्वारा गांव का समग्र विकास हुआ है। लोगों के जीवन–स्तर में सुधार आने के साथ ही उनके रहन–सहन में भी सुधार आया है। योजना द्वारा कृत कार्यों के प्रति लोगों में संतुष्टि का भाव है। शिक्षा और स्वास्थ्य के आयाम पर योजना ने बेहतर कार्य किया गया है। गांव के लोग जल की

उपयोगिता एवं उपादेयता को नहीं समझ रहे हैं क्योंकि उनमें शिक्षा, चेतना एवं जागरूकता की कमी है जिसके कारण वह जल का अधिक अपव्यय कर रहे हैं।

9.0 सुझाव

- ग्राम गोरेमऊ कलां के लोगों को पेयजल के महत्त्व के प्रति शिक्षित, जागरूक एवं चेतित किया जाना चाहिए।
- जल के उपभोग के प्रति लोगों को संवेदनशील बनाकर उनमें चेतना एवं जागरूकता का विकास किया जाये।
- कुछ ऐसी व्यवस्था किया जाये कि ग्राम में स्थित विद्यालयों में हमेशा ताजा जल बच्चों को उपलब्ध हो सके, क्योंकि अभी आपूर्ति होने वाले जल को टंकी में संकलित करना पड़ रहा है।
- लोगों को स्वच्छ पेयजल का स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयोगिता एवं उपादेयता को समझाने के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाने की आवश्यकता है।
- समाज कार्य हस्तक्षेप द्वारा लोगों के व्यवहार परिवर्तन में सहायता मिल सकती है जिससे वह जल संरक्षण के प्रति प्रेरित हो सकते हैं।
- जल संरक्षण के क्षेत्र में कार्य करने वाले गैर–सरकारी संगठनों का सहयोग लिया जाना समीचीन होगा।
- योजना प्रभावकारी ढंग से काम करे, इसके लिए लोगों में चेतना, शिक्षा एवं जागरूकता लाने की नितांत आवश्यकता है।

ग्राम डाडामऊ, विकास खण्ड जसपुरा, जनपद बाँदा

प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्र में निवासित प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 2019 से संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना का ग्राम डाडामऊ, विकास खण्ड जसपुरा, जनपद बाँदा में निवासित लोगों के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

1.0 अध्ययन की विधि

सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन विधि पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन में सर्वप्रथम ग्राम डाडामऊ, विकास खण्ड जसपुरा, जनपद बाँदा की कुल जनसंख्या, ग्राम में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान बरदानी प्रजापति से ग्राम डाडामऊ की समग्रता के संदर्भ में बात किया गया। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों से भी बात करके डाडामऊ ग्राम की मूलभूत समस्याओं एवं उपलब्ध भौतिक संसाधनों तथा वर्णित योजना के प्रभाव के संदर्भ में जानकारी प्राप्त किया गया। इसके अतिरिक्त ग्राम डाडामऊ में संचालित विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों तथा विद्यालय में नामांकित विद्यार्थियों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, ड्राप आउट की दर, विद्यालय में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं,

विद्यालय में नल संयोजन की स्थिति आदि की जानकारी प्राप्त की गई। ग्राम में स्थित आंगनबाड़ी केन्द की सहायिक श्रीमती मुन्नी राठौर से बात करके गर्भवती महिलाओं,

स्तनपान कराने वाली माताओं एवं शिशुओं के स्वास्थ्य के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। ग्राम में संचालित स्वयं सहायता समूह की महिलाओं से भी वर्णित योजना द्वारा ग्राम में आये बदलावों के संदर्भ में चर्चा किया गया। ग्राम में स्वास्थ्य केन्द्र का अभाव पाया गया। इसके पश्चात् न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों (व्यस्क महिला एवं पुरूष) से घर–घर जाकर प्रत्यक्ष रूप से संपर्क स्थापित करके ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के पश्चात् उनके जीवन में आये बदलावों के संदर्भ में जानकारी एकत्रित की

गयी तथा वर्णित योजना द्वारा ग्रामीण लोगों के जीवन स्तर में आये बदलावों का अवलोकन किया गया।

2.0 जनसंख्या एवं नल संयोजन की स्थिति

ग्राम प्रधान बरदानी प्रजापति ने बताया कि ग्राम डाडामऊ की कुल आबादी–3258 है एवं कुल परिवारों की संख्या लगभग–550 तथा मतदाताओं की संख्या–2300 है। ग्राम डाडामऊ में नल कनेक्शन स्कोप–543 है जिसके सापेक्ष 543 नल कनेक्शन प्रदान भी किये गये हैं। ग्राम में निवासित सभी परिवारों को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त करते हुए नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। अवलोकन में पाया गया कि गांव में लगी टोटियां बेहतर स्थिति में हैं। जलापूर्ति के लिए जमीन में डाली गयी पाइप कहीं भी टूटी–फूटी नहीं मिली।

3.0 कृषि की स्थिति एवं आय के स्त्रोत

ग्राम प्रधान, पूर्व प्रधान एवं पंचायत सदस्यों से प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम डाडामऊ में कुल लगभग 232 हेक्टेयर जमीन उपलब्ध है जिसमें से लगभग 170 हेक्टेयर जमीन उपजाऊ है। दलहन फसलों का उत्पादन अधिक किया जाता है। ग्राम में निवासित लोगों की आय का मुख्य साधन कृषि, मजदूरी एवं पशुपालन है। ग्राम के कुछ लोग जीवकोपार्जन के कारण बड़े शहरों/महानगरों में पलायन कर गये हैं। कुछ लोग कृषि कार्य के साथ–साथ छोटे–मोटे व्यवसाय भी कर रहे हैं जिससे उन्हें अतिरिक्त आमदनी हो रही है।

4.0 ग्राम में विद्यालय की स्थिति

ग्राम डाडामऊ में एक कम्पोजिट विद्यालय एवं दो प्राथमिक विद्यालय तथा एक उच्च प्राथमिक विद्यालय संचालित है। कम्पोजिट विद्यालय में कुल 180 विद्यार्थी, प्राथमिक विद्यालय डाडामऊ में 30 विद्यार्थी, प्राथमिक विद्यालय हुसीपुरवा में 60 विद्यार्थी एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय में कुल 20 विद्यार्थी नामांकित हैं। उल्लेखित सभी विद्यालय ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से पूर्णतः संतृप्त हैं जिससे नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति हो रही है। सभी विद्यालय मूलभूत सुविधाओं से युक्त हैं। विद्यालयों में शौचालय की सुविधा भी उपलब्ध है जिसका प्रयोग बच्चे नियमित रूप से कर रहे हैं। विद्यालय में पठन–पाठन का अच्छा परिवेश है। विद्यार्थियों के अनुपात में पर्याप्त शिक्षक विद्यालय में नियोजित हैं।

नोट : *अध्ययन का उद्‌देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

5.0 निदर्श निर्धारण

निदर्श की इकाइयों के निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। डाडामऊ ग्राम की कुल जनसंख्या 3258 के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार से 3258/10 = 326 (पूर्ण करने पर) न्यादर्शों को प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित किया गया है जिसमें 163 महिला एवं 163

पुरूष सम्मिलित हैं। अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्श की इकाइयों से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा उनके जीवन–स्तर में आये बदलावों के संदर्भ में जानकारी एकत्रित की गयी है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत अध्ययन में डाडामऊ ग्राम से संबद्ध हितधारकों से भी वर्णित योजना द्वारा आये बदलावों के संदर्भ में परिचर्चा किया गया है।

6.0 समाविष्ट के मानदण्ड

डाडामऊ ग्राम में केन्द्र सरकार द्वारा संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' द्वारा लोगों के जीवन स्तर में आये परिवर्तनों के मूल्यांकन हेतु ग्राम की सम्पूर्ण जनसंख्या के 1/10 वें भाग के साथ ही, ग्राम से संबद्ध हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

7.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसी इकाई को न्यादर्श एवं हितधारकों के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है, जो कि डाडामऊ ग्राम से सम्बद्ध और वर्णित योजना के लाभार्थी नहीं थे।

8.0 परिणाम एवं चर्चा

ग्राम डाडामऊ विकास खण्ड जसपुरा, जनपद बाँदा का सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन के आधार पर ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना द्वारा लोगों की

जीवन–स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श की इकाइयों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण वस्तुनिष्ठ एवं निष्पक्ष रूप से करते हुए निष्कर्ष निकाले गये हैं, जो कि निम्नलिखित हैं–

8.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा ग्राम डाडामऊ में महिलाओं के जीवन स्तर में आये बदलावों का अध्ययन करने के लिए कुल 163 (कुल न्यादर्शों का 50 प्रतिशत) महिला न्यादर्शों से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार हैं–

अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन विधि पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित होने के कारण उनके स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है जिसके कारण बीमारियों में कमी आयी है। 95 प्रतिशत महिला न्यादर्शों ने बताया कि बीमारी कम होने के कारण इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है। 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि गांव में बने शौचालय जल उपलब्धता के कारण पूर्णतः क्रियात्मक हो गये हैं जिससे सभी महिलायें शौचालय का नियमित रूप से प्रयोग कर रही हैं। शौचालयों के कार्यात्मक होने से महिलाओं को बहुत सुविधा हुई है। अब उनके सम्मान एवं सुरक्षा में वृद्धि हुई है। 97 प्रतिशत महिला न्यादर्शों के अनुसार प्रत्येक परिवार को जल की उपलब्धता से महिलाओं के समय में बचत हुयी है और उनका कार्य बोझ भी

कम हुआ है। न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के पश्चात् महिलाओं के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सकारात्मक सुधार आया है। 95 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार समय की बचत होने के

कारण वह बच्चों एवं परिवार की देखभाल पर पूर्व की अपेक्षा अधिक समय दे रही हैं जिससे परिवार में उनका सम्मान बढ़ा है। न्यादर्श में सम्मिलित 94 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि अब महिलायें कृषि एवं संबद्ध गतिविधियों तथा सिलाई–कढ़ाई जैसे रोजगारपरक कार्यों में अधिक समय दे रही हैं।

8.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

ग्राम डाडामऊ में एक कम्पोजिट विद्यालय दो प्राथमिक विद्यालय एवं एक उच्च प्राथमिक विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है जिनमें विद्यार्थियों का नामांकन क्रमशः 180 : 30 : 60 : 20 है। सभी विद्यालयों में ''हर घर नल–हर घर जल''

योजना द्वारा नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। कम्पोजिट विद्यालय के प्रधानाचार्य ने बताया कि वर्णित योजना के कारण बच्चों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता आयी है। बच्चों के स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने के कारण उनके सीखने की

क्षमता में वृद्धि हुई है। सभी विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों से वार्ता में पता चला कि वर्णित योजना के संचालन के बाद से बच्चों के नामांकन दर में सुधार एवं ड्राप आउट की दर में कमी आयी है। अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं ने बताया कि गांव के लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूकता आयी है। अवलोकन में पाया गया कि गांव के लोग बच्चों की शिक्षा के प्रति चिंतित हैं और वह बच्चों को पढ़ा–लिखा कर अच्छा व्यक्ति बनाना चाहते हैं। इस प्रकार अवलोकन में पाया गया कि ग्राम में अनेक विद्यालय संचालित हैं जिनमें पठन–पाठन का अच्छा परिवेश बच्चों को मिल रहा है। सभी विद्यालयों में पर्याप्त शिक्षक भी नियोजित हैं जिससे बच्चों को बेहतर शिक्षा प्राप्त हो रही है।

8.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

अध्ययन में सम्मिलित कुल 326 न्यादर्शों में से 100 प्रतिशत न्यादर्श की इकाइयों ने स्वीकार किया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा स्वच्छ पेयजल के उपलब्धता सुनिश्चित होने से लोगों के स्वास्थ्य में सुधार आया है। 98 प्रतिशत लोगों ने बताया कि अब जल–जनित बीमारियां बहुत कम हुई हैं। पेट में दर्द की समस्या से छुटकारा मिला है। 97 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि अब स्वच्छ पेयजल के कारण पाचन क्रिया में सुधार आया है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी जिससे धन की बचत हुई है। 96 प्रतिशत के अनुसार शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार आने के कारण वह स्वयं को अधिक ऊर्जावान महसूस कर रहे हैं। 95 प्रतिशत न्यादर्श की इकाइयों के अनुसार स्वास्थ्य में सुधार आने के

कारण व्यावसायिक गतिविधियों में गांव के लोगों की भागीदारी बढ़ी है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि जल उपलब्धता के कारण शौचालयों के कार्यात्मक होने से गांव के लोगों में मक्खियों से होने वाली बीमारियों में भी कमी आयी है। चर्म रोगों में भी कमी आयी है क्योंकि अब जल की उपलब्धता के कारण नियमित रूप से लोग स्नान कर रहे

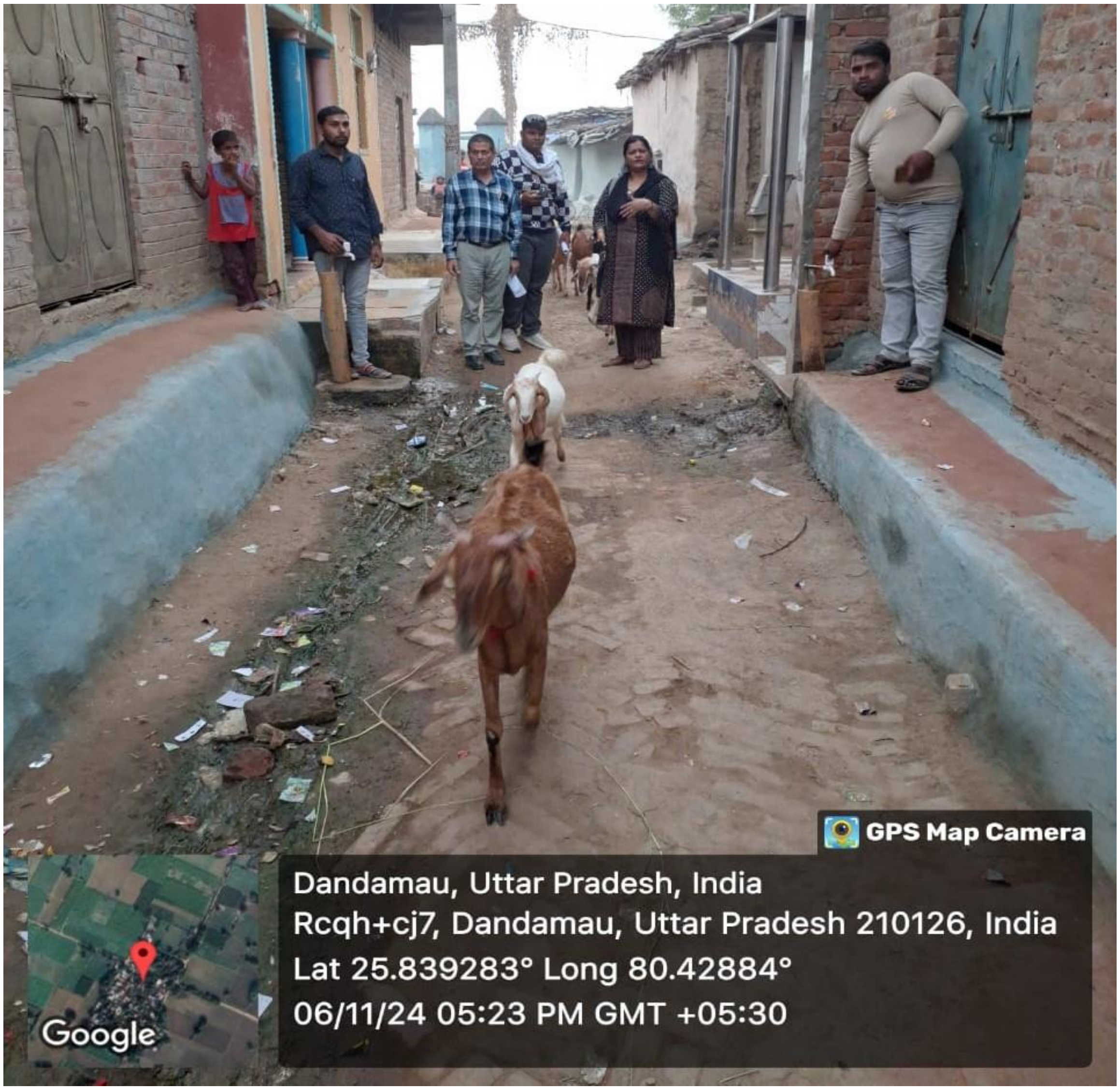

हैं जिससे शरीर स्वच्छ रहता है। इस प्रकार से ग्राम डाडामऊ में निवासित लोगों से समग्र स्वास्थ्य में सुधार देखा गया।

8.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत इकाइयों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के पूर्व गांव के केवल समृद्ध एवं उच्च जाति के लोगों तक ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता थी, निम्न आय एवं जाति के लोग कुओं

एवं तालाबों में उपलब्ध जल से अपनी दैनिक क्रियाओं का संपादन करते थे। गांव में

जल जनित भेदभाव भी था क्योंकि उच्च जाति के लोगों के नल में निम्न जाति के लोग जल नहीं पी सकते थे। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के बाद से प्रत्येक परिवार को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हुआ है जिससे जल के कारण होने वाले झगड़ों में कमी आयी है तथा जल जनित भेदभाव की समाप्ति भी हुई है। प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं ने बताया कि वर्णित योजना के कारण गांव में खुशहाली आयी है तथा सामाजिक एकता को प्रोत्साहन मिला है। 96 प्रतिशत लोगों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के कारण सामाजिक गतिशीलता भी आयी है तथा लोगों के रहन–सहन का स्तर उच्च हुआ है। शादी–विवाह के संदर्भ में चर्चा करने पर 93 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि बाल–विवाह में कमी आयी है तथा आधुनिक रीति–रिवाज परंपरागत रीति–रिवाजों को प्रतिस्थापित किये हैं।

8.5 रोजगार के अवसर

''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा रोजगार के क्षेत्र में आये परिवर्तनों के संदर्भ में चर्चा करने पर न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत लोगों ने बताया कि ग्राम डाडामऊ में लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत कृषि, पशुपालन एवं मजदूरी है। कुछ लोग कृषि के साथ ही छोटे–मोटे व्यवसाय करके भी अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। गांव में लगभग 310 नग जमीन उपलब्ध है जिस पर अच्छी खेती होती है। न्यादर्श में सम्मिलित 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण लोगों के स्वास्थ्य में सुधार आने के कारण व्यावसायिक गतिविधियों में उनकी भूमिका बढ़ी है। युवाओं का रूझान खेती–किसानी के प्रति हुआ है। गांव में मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता के कारण युवाओं में गांव के प्रति अपनापन बढ़ा है जिसके कारण वह अपने गांव में ही रहकर रोजगार करना पसंद कर रहे हैं जिससे उनके पलायन में कमी आयी है। अवलोकन में पाया गया कि युवाओं के आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी हुई है।

सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन विधि पर आधारित अध्ययन में इस तथ्य की पुष्टि होती है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ग्राम डाडामऊ, विकास खण्ड जसपुरा, जनपद बाँदा में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल रही है। यह योजना ग्राम के लोगों के समग्र विकास को संबोधित है जिसके कारण लोगों में खुशहाली का प्रतीक बनी हुई है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा गांव का समग्र विकास सुनिश्चित करते हुए लोगों की जीवन–शैली में सकारात्मक सुधार किया गया है। योजना द्वारा कृत कार्यों के प्रति लोगों में संतुष्टि का भाव है। शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक परिवर्तन के आयाम पर योजना द्वारा बेहतर कार्य किया गया है। अवलोकन में पाया गया कि गांव के लोग जल की उपयोगिता एवं उपादेयता को नहीं समझ रहे हैं क्योंकि उनमें शिक्षा, चेतना एवं जागरूकता की कमी है जिसके कारण वह जल का अधिक अपव्यय कर रहे हैं। इसके लिए उनमें जागरूकता एवं चेतना तथा संवेदनशीलता का विकास करने की आवश्यकता है।

9.0 सुझाव

- लोगों को पेयजल के महत्त्व के प्रति संवेदनशील, शिक्षित एवं जागरूक करने की जरूरत है।
- जल के अपव्यय के प्रति लोगों को संवेदनशील बनाया जाना चाहिए।
- कुछ ऐसी व्यवस्था किया जाये कि ग्राम में स्थित विद्यालयों में हमेशा ताजा जल बच्चों को उपलब्ध हो सके, क्योंकि अभी आपूर्ति होने वाले जल को टंकी में संकलित करना पड़ रहा है।
- लोगों को स्वच्छ पेयजल का स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयोगिता एवं उपादेयता को समझाने के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाने की आवश्यकता है।
- समाज कार्य हस्तक्षेप द्वारा लोगों के व्यवहार परिवर्तन में सहायता मिल सकती है जिससे वह जल संरक्षण के प्रति प्रेरित हो सकते हैं।
- जल संरक्षण के क्षेत्र में कार्य करने वाले गैर–सरकारी संगठनों का सहयोग लिया जाना समीचीन होगा।

ग्राम नरी, विकास खण्ड तिन्दवारी, जनपद बाँदा

प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्र में निवासित प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 2019 से संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना का ग्राम नरी विकास खण्ड तिन्दवारी, जनपद बाँदा में निवासित लोगों के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

1.0 अध्ययन की विधि

सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन विधि पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन में सर्वप्रथम ग्राम नरी विकास खण्ड तिन्दवारी, जनपद बाँदा की कुल जनसंख्या, ग्राम में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्रीमती बिटुलिया से ग्राम नरी की समग्रता के संदर्भ में बात किया गया। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों से भी बात करके नरी ग्राम की मूलभूत समस्याओं एवं उपलब्ध भौतिक संसाधनों तथा वर्णित योजना के प्रभाव के संदर्भ में जानकारी प्राप्त किया गया। इसके अतिरिक्त ग्राम नरी में संचालित विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों तथा विद्यालय में नामांकित विद्यार्थियों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, ड्राप आउट की दर, विद्यालय में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं, विद्यालय में नल संयोजन की स्थिति आदि की जानकारी प्राप्त की गई। ग्राम में स्थित आंगनबाड़ी केन्द की सहायिका श्रीमती माधुरी मिश्रा से बात करके गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं एवं शिशुओं के स्वास्थ्य के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। ग्राम में संचालित स्वयं सहायता समूह की महिलाओं से भी वर्णित योजना द्वारा ग्राम में आये बदलावों के संदर्भ में चर्चा किया गया। ग्राम में स्वास्थ्य केन्द्र का अभाव पाया गया। इसके पश्चात् न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों (व्यस्क महिला एवं पुरूष) से घर–घर जाकर प्रत्यक्ष रूप से संपर्क स्थापित करके ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के पश्चात् उनके जीवन में आये

बदलावों के संदर्भ में जानकारी एकत्रित की गयी तथा वर्णित योजना द्वारा ग्रामीण लोगों के जीवन स्तर में आये बदलावों का अवलोकन किया गया।

2.0 जनसंख्या एवं नल संयोजन की स्थिति

ग्राम प्रधान श्रीमती बिटुलिया एवं पंचायत सदस्यों ने बताया कि ग्राम नरी की कुल आबादी–4200 है एवं कुल परिवारों की संख्या लगभग–695 तथा मतदाताओं की संख्या–3400 है। ग्राम नरी में नल कनेक्शन स्कोप–689 है जिसके सापेक्ष 689 नल कनेक्शन प्रदान भी किये गये हैं। ग्राम में निवासित सभी परिवारों को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त करते हुए नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन में पाया गया कि गांव में जल के लगी टोटियां बेहतर स्थिति में हैं।

3.0 कृषि की स्थिति एवं आय के स्त्रोत

हितधारकों एवं न्यादर्शों से प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम नरी में कुल लगभग 4800 एकड़ जमीन उपलब्ध है जिसमें से लगभग 2900 एकड. जमीन उपजाऊ है। खेत में दलहन फसलों का उत्पादन अधिक किया जाता है। ग्राम में निवासित लोगों की आय का मुख्य साधन कृषि, मजदूरी एवं पशुपालन है। ग्राम के कुछ लोग जीवकोपार्जन के कारण बड़े शहरों/महानगरों में पलायन कर गये हैं। कुछ लोग कृषि कार्य के साथ–साथ छोटे–मोटे व्यवसाय भी कर रहे हैं जिससे उन्हें अतिरिक्त आमदनी हो रही है।

4.0 ग्राम में विद्यालय की स्थिति

ग्राम नरी में कुल चार प्राथमिक एवं दो उच्च प्राथमिक विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है। प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों तथा ग्राम प्रधान से परिचर्चा में पाया गया कि सभी विद्यालय ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से पूर्णतः संतृप्त हैं जिनमें नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। चारों प्राथमिक विद्यालयों में क्रमशः 75 : 85 : 40 : 65 विद्यार्थी नामांकित हैं। उच्च प्राथमिक विद्यालयों में क्रमशः 50 एवं 75 विद्यार्थी नामांकित हैं। सभी विद्यालयों में कुल मिलाकर 06 शिक्षामित्र नियोजित हैं। सभी विद्यालय वर्णित योजना से आच्छादित हैं। विद्यालयों में आवश्यक मूलभूत सुविधायें उपलब्ध हैं। शिक्षक नियमित रूप से विद्यालय आते हैं और पठन–पाठन की अच्छी व्यवस्था विद्यालय में है।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

5.0 निदर्श निर्धारण

निदर्श की इकाइयों के निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। नरी ग्राम की कुल जनसंख्या 4200 के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार से 4200/10 = 420 (पूर्ण करने पर) न्यादर्शों को प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित किया गया है जिसमें 210 महिला एवं 210

पुरूष सम्मिलित हैं। अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्श की इकाइयों से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा उनके जीवन–स्तर में आये बदलावों के संदर्भ में जानकारी एकत्रित की गयी है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत अध्ययन में नरी ग्राम से संबद्ध हितधारकों से भी वर्णित योजना द्वारा आये बदलावों के संदर्भ में परिचर्चा किया गया है।

6.0 समाविष्ट के मानदण्ड

नरी ग्राम में केन्द्र सरकार द्वारा संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' द्वारा लोगों के जीवन स्तर में आये परिवर्तनों के मूल्यांकन हेतु ग्राम की सम्पूर्ण जनसंख्या के 1/10 वें भाग के साथ ही, ग्राम से संबद्ध हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

7.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसी इकाई को न्यादर्श एवं हितधारकों के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है, जो कि नरी ग्राम से सम्बद्ध और वर्णित योजना के लाभार्थी नहीं थे।

8.0 परिणाम एवं चर्चा

ग्राम नरी, विकास खण्ड तिन्दवारी, जनपद बाँदा का सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन के आधार पर ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना द्वारा लोगों की

जीवन–स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श की इकाइयों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण वस्तुनिष्ठ एवं निष्पक्ष रूप से करते हुए निष्कर्ष निकाले गये हैं, जो कि निम्नलिखित हैं–

8.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा ग्राम नरी में महिलाओं के जीवन स्तर में आये बदलावों का अध्ययन करने के लिए कुल 210 (कुल न्यादर्शों का 50 प्रतिशत) महिला न्यादर्शों से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार हैं–

अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन विधि पर आधारित टीम सर्वेक्षण में पाया गया कि अध्ययन में सम्मिलित सभी महिला उत्तरदाता सहमत हैं कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा उन्हें नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है जिससे जल संकट के समाधान के साथ ही अनेक लाभ प्राप्त हुए हैं। न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' के कारण स्वच्छ पेयजल उपलब्ध होने के कारण स्वास्थ्य में सुधार आया है। 98 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि बीमारियों के कम होने से इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है जिसके कारण धन की बचत हुई है। 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि समय की बचत होने के कारण वह बच्चों एवं परिवार की देखभाल के साथ ही आय उत्पादक कार्यों में भी अधिक समय दी रही हैं। 94 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि घर

में ही जल की उपलब्धता के कारण कार्य बोझ में कमी आयी है। 96 प्रतिशत महिलाओं के अनुसार स्वास्थ्य स्तर में सुधार एवं परिवार को अधिक समय देने तथा आय अर्जक गतिविधियों में महिलाओं की भूमिका बढ़ने के कारण परिवार एवं समाज में उन्हें सम्मान प्राप्त हुआ है। अध्ययन में सम्मिलित सभी 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि जल उपलब्धता से घर में बने शौचालय का वह नियमित रूप से प्रयोग कर रही हैं जिसके

कारण खुले में शौच जाने में लगने वाले समय की बचत हुई है, साथ ही उनके सम्मान

एवं सुरक्षा में वृद्धि हुई है तथा मक्खियों से फैलने वाली बीमारियों में भी कमी आयी है। स्वास्थ्य अच्छा होने तथा समय की बचत के कारण गांव की कुछ महिलायें पास के बाजार में सब्जी तथा अन्य वस्तुओं की दूकानें भी लगाती हैं जिससे उनकी आमदनी में वृद्धि होती है। न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के पश्चात् महिलाओं के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार आया है। इस प्रकार से यह योजना महिलाओं के जीवन के विविध पक्षों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हुए उन्हें बेहतर जीवन जीने का अवसर प्रदान की है।

8.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

ग्राम नरी में चार प्राथमिक एवं दो उच्च प्राथमिक विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है। विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों से वार्ता में पाया गया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' से सभी विद्यालय संतृप्त हैं। प्राथमिक विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती मनीषा देवी ने बताया कि वर्णित योजना के लागू होने के बाद से बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार एवं शिक्षा के प्रति जागरूकता आने के कारण बच्चों का नामांकन विद्यालय में बढ़ा हैं तथा उनकी उपस्थिति 100 प्रतिशत हुई है। बालिकाओं के संदर्भ में बात करने पर उन्होंने बताया कि बालिकाओं की शिक्षा में भी सुधार आया है और विद्यालय में नामांकित बच्चियां नियमित रूप से विद्यालय आ रही हैं। उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों ने बताया कि बच्चों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता आयी है जिससे उनका मन

पढ़ने में लग रहा है। इसी प्रकार से अन्य विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों ने भी बताया कि वर्णित योजना के लागू होने के बाद से पठन–पाठन में बहुत सुधार आया है, बच्चों की उपस्थिति एवं नामांकन दर में भी बढ़ोत्तरी हुई है। न्यादर्श में सम्मिलित 100

प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के बाद से अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता का सृजन हुआ है जिससे वह बच्चों की शिक्षा पर अधिक ध्यान देने के साथ ही शिक्षा पर अधिक निवेश भी कर रहे हैं। 96 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार बच्चे नियमित रूप से विद्यालय जा रहे हैं और घर पर आकर पर्याप्त समय अध्ययन पर दे रहे हैं। अब बच्चों को घरेलू कार्यों में अधिक समय नहीं लगाया जाता है जिसके कारण वह अपनी पढ़ाई–लिखाई पर अधिक समय दे पा रहे हैं।

8.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के कारण उनके स्वास्थ्य में सुधार आया हैं क्योंकि अब दूषित जल के स्थान पर स्वच्छ पेयजल के उपलब्ध होने से बीमारियां कम हुई हैं। 98 प्रतिशत न्यादर्श की इकाइयों ने स्वीकार किया कि बीमारियों के कम होने से इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी

है। अध्ययन में सम्मिलित 97 प्रतिशत लोगों ने बताया कि पेट में दर्द की समस्या से छुटकारा मिला है। 93 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वर्णित योजना के कारण बार–बार शौच जाने की जरूरत नहीं पड़ती है क्योंकि अब पेयजल स्वच्छ मिल रहा है जिससे पाचन शक्ति में सुधार आया है और पेट में गुड़गुड़ाहट नहीं होती है। 95 प्रतिशत

न्यादर्शों के अनुसार शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार आने के कारण वह स्वयं को अधिक ऊर्जावान महसूस कर रहे हैं जिससे उनकी कार्य क्षमता बढ़ी है। अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि जल उपलब्धता के कारण वह घर में शौचालयों का नियमित रूप से उपयोग कर रहे हैं जिससे गांव खुले में शौच मुक्त हो चुका है, परिणामस्वरूप बीमारियों में कमी आयी है जिससे स्वास्थ्य में सुधार और धन की बचत हुई है। स्पष्ट है कि वर्णित योजना के कारण ग्राम में निवासित लोगों के स्वास्थ्य में सुधार आया है जिससे उनकी कार्य क्षमता बढ़ने के साथ ही धन की बचत हुई।

8.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन विधि पर आधारित अध्ययन में 100 प्रतिशत इकाइयों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के पूर्व गांव के केवल समृद्ध एवं उच्च जाति के लोगों तक ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित थी। गांव में निवासित निम्न आय एवं जाति के लोग कुओं एवं तालाबों में उपलब्ध जल का अपनी दैनिक क्रियाओं में उपयोग करते थे जिसके कारण उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के बाद से प्रत्येक परिवार को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा स्वच्छ पेयजल की नियमित रूप से आपूर्ति की जा रही है। 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि जल संकट का समाधान होने से गांव में जल के कारण होने वाले झगड़ों में कमी आयी है। 95 प्रतिशत के अनुसार अब गांव के लोग मिलजुल कर रहे हैं और उनमें

खुशहाली आयी है तथा सामाजिक एकता स्थापित हुई है। उत्तरदाताओं से शादी–विवाह के संदर्भ में चर्चा करने पर 95 प्रतिशत न्यादर्श की इकाइयों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के कारण दहेज एवं बाल–विवाह जैसी कुरीतियों में कमी आयी है जिससे समाज में महिलाओं को समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त हुआ है।

8.5 रोजगार के अवसर

अध्ययन में पाया गया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा रोजगार के क्षेत्र में भी परिवर्तन आये हैं। न्यादर्श में सम्मिलित लोगों ने बताया कि ग्राम नरी में लोगों की आय का मुख्य साधन कृषि, पशुपालन एवं मजदूरी है। गांव के कुछ लोग कृषि कार्य के साथ–साथ छोटे–मोटे व्यवसाय करके भी अपनी आय को बढ़ा रहे हैं। हितधारकों से प्राप्त जानकारी के अनुसार गांव में उपलब्ध लगभग 2900 एकड़ जमीन पर कृषि का कार्य किया जाता है। अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्श की 96 प्रतिशत इकाइयों ने बताया कि स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण स्वास्थ्य में आये सुधार के कारण युवाओं में अपने गांव के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ है जिससे वह गांव में ही रहकर छोटे–मोटे व्यवसाय करने के इच्छुक हैं। 92 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि युवाओं की भागीदारी कृषि एवं पशुपालन में बढ़ी है। 95 प्रतिशत अध्ययन की इकाइयों के अनुसार गांव के कुछ युवा छोटी–मोटी दूकान खोल कर अपनी आजीविका चलाने को उन्मुख हैं जिससे उनके पलायन में कमी आयी है। अवलोकन में पाया गया कि

युवाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है क्योंकि अब उनका स्वास्थ्य अच्छा हुआ है और रोजगार के बेहतर विकल्प भी गांव में उपलब्ध हुए हैं।

उपर्युक्त के विश्लेषण से स्पष्ट है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ग्राम नरी, विकास खण्ड तिन्दवारी, जनपद बाँदा में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल रही है जिसकी पुष्टि सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त आंकड़ें करते हैं। यह योजना नरी ग्राम के लोगों का समग्र विकास करने में सफल रही है। गांव के लोगों में योजना के प्रति खुशहाली का भाव है। महिलायें इस योजना से बहुत खुश हैं क्योंकि उनके कार्य बोझ में बहुत कमी आयी है। लोगों का जीवन–स्तर योजना के कारण सुधरा है। सामाजिक व्यवहार में बदलाव लाने में भी यह योजना सफल रही है। अध्ययन में सम्मिलित हितधारकों से प्राप्त जानकारी में भी योजना के प्रति उच्च स्तर की संतुष्टि देखी गयी। अध्ययन में पाया गया कि गांव के लोग जल का अधिक अपव्यय कर रहे हैं जिसके लिए उन्हें जागरूक करने की आवश्यकता है।

9.0 सुझाव

- लोगों को पेयजल के महत्त्व के प्रति संवेदनशील, शिक्षित एवं जागरूक करने की जरूरत है।
- जल के अपव्यय के प्रति लोगों को संवेदनशील बनाया जाना चाहिए।
- लोगों को स्वच्छ पेयजल का स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयोगिता एवं उपादेयता को समझाने के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाने की आवश्यकता है।

- समाज कार्य हस्तक्षेप द्वारा लोगों के व्यवहार परिवर्तन में सहायता मिल सकती है जिससे वह जल संरक्षण के प्रति प्रेरित हो सकते हैं।
- जल संरक्षण के क्षेत्र में कार्य करने वाले गैर–सरकारी संगठनों का सहयोग लिया जाना समीचीन होगा।

ग्राम सहूरपुर, विकास खण्ड तिन्दवारी, जनपद बाँदा

प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्र में निवासित प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 2019 से संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना का ग्राम सहूरपुर, विकास खण्ड तिन्दवारी, जनपद बाँदा में निवासित लोगों के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

1.0 अध्ययन की विधि

सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन विधि पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन में सर्वप्रथम ग्राम सहूरपुर, विकास खण्ड तिन्दवारी, जनपद बाँदा की कुल जनसंख्या, ग्राम में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्री राम दयाल पटेल से ग्राम सहूरपुर की समग्रता के संदर्भ में बात किया गया। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के पूर्व प्रधान श्री चन्द्रपाल एवं ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों से भी बात करके सहूरपुर ग्राम की मूलभूत समस्याओं एवं उपलब्ध भौतिक संसाधनों तथा वर्णित योजना के प्रभाव के संदर्भ में जानकारी प्राप्त किया गया। इसके अतिरिक्त ग्राम सहूरपुर में संचालित विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों तथा विद्यालय में नामांकित विद्यार्थियों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, ड्राप आउट की दर, विद्यालय में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं, विद्यालय में नल संयोजन की स्थिति आदि की जानकारी प्राप्त की गई। ग्राम में स्थित आंगनबाड़ी केन्द की सहायिका एवं गांव की आशा से बात करके गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं एवं शिशुओं के स्वास्थ्य के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। ग्राम में स्वास्थ्य केन्द्र का अभाव पाया गया। इसके पश्चात् न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों (व्यस्क महिला एवं पुरूष) से घर–घर जाकर प्रत्यक्ष रूप से संपर्क स्थापित करके "हर घर नल–हर घर जल" योजना के संचालन के पश्चात्

उनके जीवन में आये बदलावों के संदर्भ में जानकारी एकत्रित की गयी तथा वर्णित योजना द्वारा ग्रामीण लोगों के जीवन स्तर में आये बदलावों का अवलोकन किया गया।

2.0 जनसंख्या एवं नल संयोजन की स्थिति

ग्राम के हितधारकों ने बताया कि ग्राम सहूरपुर की कुल आबादी—600 है एवं कुल परिवारों की संख्या लगभग—118 तथा मतदाताओं की संख्या—468 है। ग्राम सहूरपुर में

नल कनेक्शन स्कोप—118 है जिसके सापेक्ष 118 नल कनेक्शन प्रदान भी किये गये हैं। ग्राम में निवासित सभी परिवारों को ''हर घर नल—हर घर जल'' योजना से संतृप्त करते हुए नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। अध्ययनकर्ता द्वारा

अवलोकन में पाया गया कि गांव में नल के लगी टोटियां बेहतर स्थिति में हैं। जमीन में पाइप भी अच्छी प्रकार से डाली गयी है।

3.0 कृषि की स्थिति एवं आय के स्त्रोत

हितधारकों एवं न्यादर्शों से प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम में निवासित लोगों की आय का मुख्य साधन कृषि, मजदूरी एवं पशुपालन है। ग्राम के कुछ लोग जीवकोपार्जन के कारण बड़े शहरों/महानगरों में पलायन कर गये हैं। कुछ लोग कृषि कार्य के साथ–साथ छोटे–मोटे व्यवसाय भी कर रहे हैं जिससे उन्हें अतिरिक्त आमदनी हो रही है। कुछ लोग सरकारी एवं प्राइवेट नौकरी भी कर रहे हैं।

4.0 ग्राम में विद्यालय की स्थिति

ग्राम सहूरपुर में एक प्राथमिक एवं एक उच्च प्राथमिक विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री अवधेश कुमार के अनुसार विद्यालय में कुल 03 स्टॉफ है। उच्च प्राथमिक विद्यालय में भी कुल 03 स्टॉफ है। दोनों विद्यालयों को "हर घर नल–हर घर जल" योजना से पूर्णतः संतृप्त किया जा चुका है जिससे नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति हो रही है। प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक दोनों में कुल मिलाकर 87 विद्यार्थी नामांकित हैं। दोनों विद्यालयों में शौचालय की सुविधा भी उपलब्ध है जिसका प्रयोग बच्चे नियमित रूप से कर रहे हैं।

GPS Map Camera
Sahoorpur, Uttar Pradesh, India
Pf8f+qgh, Sahoorpur, Uttar Pradesh 210123, India
Lat 25.716102° Long 80.474016°
06/11/24 02:53 PM GMT +05:30
Google

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

5.0 निदर्श निर्धारण

निदर्श की इकाइयों के निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। सहूरपुर ग्राम की कुल जनसंख्या 600 के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार से 600/10 = 60 (पूर्ण करने पर) न्यादर्शों को प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित किया गया है जिसमें 30 महिला एवं 30 पुरूष सम्मिलित हैं। अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्श की इकाइयों से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा उनके जीवन–स्तर में आये बदलावों के संदर्भ में जानकारी एकत्रित की गयी है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत अध्ययन में सहूरपुर ग्राम से संबद्ध हितधारकों से भी वर्णित योजना द्वारा आये बदलावों के संदर्भ में परिचर्चा किया गया है।

6.0 समाविष्ट के मानदण्ड

सहूरपुर ग्राम, वि0ख0 तिन्दवारी, जनपद बाँदा में केन्द्र सरकार द्वारा संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' द्वारा लोगों के जीवन स्तर में आये परिवर्तनों के मूल्यांकन हेतु ग्राम की सम्पूर्ण जनसंख्या के 1/10 वें भाग के साथ ही, ग्राम से संबद्ध हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

7.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसी इकाई को न्यादर्श एवं हितधारकों के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है, जो कि सहूरपुर ग्राम से सम्बद्ध और वर्णित योजना के लाभार्थी नहीं थे।

8.0 परिणाम एवं चर्चा

ग्राम सहूरपुर, विकास खण्ड तिन्दवारी, जनपद बाँदा का सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन के आधार पर ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना द्वारा लोगों की जीवन–स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श की इकाइयों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण वस्तुनिष्ठ एवं निष्पक्ष रूप से करते हुए निष्कर्ष निकाले गये हैं, जो कि निम्नलिखित हैं–

8.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा ग्राम सहूरपुर में महिलाओं के जीवन स्तर में आये बदलावों का अध्ययन करने के लिए कुल 30 (कुल न्यादर्शों का 50 प्रतिशत) महिला न्यादर्शों से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार हैं–

अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन विधि पर आधारित टीम सर्वेक्षण में पाया गया कि अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत महिलाओं के अनुसार ''हर घर नल–हर घर जल''

योजना द्वारा प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति नियमित रूप से की जा रही है। न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण बीमारियों में कमी आने से महिलाओं का स्वास्थ्य स्तर सुधरा है। 95 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि बीमारियों के कम होने से इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है जिसके कारण धन की बचत हुई है। इसी प्रकार से 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार समय की बचत होने से महिलायें अपने बच्चों एवं परिवार की देखभाल पर अधिक समय दे रही हैं जिसके कारण उनके सम्मान में बढ़ोत्तरी हुई है। 93 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि घर में ही जल की उपलब्धता के कारण कार्य बोझ में कमी आयी है। 100 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि जलापूर्ति

के कारण घर में बने शौचालय का वह नियमित रूप से प्रयोग कर रही हैं जिसके कारण बीमारियों से बचाव होने के साथ ही महिला सम्मान एवं सुरक्षा भी सुनिश्चित हुई है। इस प्रकार से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा महिलाओं की शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार आया है और महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति भी उच्च हुई है।

8.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

ग्राम सहूरपुर में एक प्राथमिक एवं एक उच्च प्राथमिक विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है। दोनों विद्यालय वर्णित योजना से पूर्णतः संतृप्त हैं। दोनों

विद्यालयों में बच्चों के नामांकन दर में सुधार आया है और बच्चे नियमित रूप से विद्यालय में पढ़ने जा रहे हैं। ड्राप आउट की दर में भी कमी आयी है। 97 प्रतिशत उत्तरदाताओं

ने बताया कि शिक्षा के जागरूकता आने के कारण वह बच्चों की सभी शैक्षिक जरूरतों को पूर्ण कर रहे हैं। 95 प्रतिशत अध्ययन की इकाइयों के अनुसार माता–पिता अपने बच्चों को नियमित रूप से तैयार करके समय से विद्यालय भेज रहे हैं। गांव में संचालित विद्यालयों के शिक्षकों से चर्चा करने पर ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव का उल्लेख किया गया। अवलोकन में पाया गया कि गांव में स्कूल समय में बच्चे घूमते हुए नहीं मिले जिससे पुष्टि होती है कि विद्यालय में बच्चों की 100 प्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित हुई है। 91 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालन के पूर्व गांव के बच्चों का स्वास्थ्य ठीक ना होने के कारण वह नियमित रूप से विद्यालय नहीं जा पाते थे लेकिन अब वह नियमित विद्यालय जा रहे हैं। इससे पुष्टि होती है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा ग्राम सहूरपुर की शिक्षा में सुधारात्मक पहल की गयी है जिससे शिक्षा व्यवस्था में जमीनी स्तर पर सुधार आया है।

8.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

अध्ययन में सम्मिलि उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के कारण उनके स्वास्थ्य में सुधार आया हैं क्योंकि अब दूषित जल से होने वाली बीमारियां कम हुई हैं। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों से पता चलता है कि स्वच्छ पेयजल के कारण बीमारियों में कमी आने से इलाज पर होने वाले खर्च कम हुए हैं। स्थानीय डॉक्टर ने भी स्वास्थ्य में सुधार आने की बात कही। अध्ययन में सम्मिलित

100 प्रतिशत न्यादर्श की इकाइयों ने बताया कि पेट में दर्द की समस्या से छुटकारा मिलने साथ ही जल–जनित बीमारियों में भी कमी आयी है। जलापूर्ति के कारण गांव हकीकत में खुले में शौच मुक्त हुआ है जिसके कारण गंदगी एवं मक्खियों से फैलने

वाली बीमारियों में कमी आयी है जिसका प्रभाव लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ा है। 94 प्रतिशत लोगों के अनुसार अब उनका पेट साफ रहता है। 100 प्रतिशत न्यादर्शों के अनुसार शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार आया है जिसके कारण उनकी कार्य क्षमता एवं प्रदर्शन में सुधार आया है।

8.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन विधि पर आधारित अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत इकाइयों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के पूर्व

गांव के केवल समृद्ध लोगों तक ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित थी। गांव में निवासित निम्न आय के लोग कुओं एवं तालाबों में उपलब्ध जल का प्रयोग अपनी दैनिक क्रियाओं में करते थे जिसके कारण उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था। सभी

उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के बाद से प्रत्येक परिवार को योजना द्वारा स्वच्छ पेयजल की नियमित रूप से आपूर्ति की जा रही है। अध्ययन में सम्मिलित 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार जल संकट के समाधान के साथ ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण गांव में सामाजिक एकता एवं सहकार का भाव आया है, लोगों में अपनेपन की भावना का जन्म हुआ है और लोग एक–दूसरे के काम आ रहे हैं। गांव में खुशहाली आयी है और सामाजिक व मानसिक तनाव कम हुआ है। लोगों के जीवन–स्तर में परिवर्तन आने के कारण शादी–विवाह के मामले में भी परिवर्तन हुआ है। वैवाहिक मामलों में लड़के एवं लड़की की पसंद को प्राथमिकता दी

जा रही है। धन की बचत एवं रोजगार में होने वाली आमदनी के कारण विवाह समारोह में दिखावा भी खूब हो रहा है।

8.5 रोजगार के अवसर

''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा रोजगार के क्षेत्र में आये परिवर्तनों के संदर्भ में चर्चा करने पर न्यादर्श में सम्मिलित

लोगों एवं हितधारकों ने बताया कि ग्राम सहूरपुर में अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि, पशुपालन एवं मजदूरी है। गांव के कुछ लोग शहरों में जाकर सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में नौकरी भी कर रहे हैं। कुछ लोग गांव में कृषि कार्य के साथ ही अन्य रोजगारपरक कार्यों में संलग्न हैं जिससे उन्हें अतिरिक्त आमदनी हो रही है। 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं

ने बताया कि स्वास्थ्य में सुधार आने के कारण युवाओं की भागीदारी कृषि एवं पशुपालन तथा अन्य रोजगारपरक कार्यों में बढ़ी है। वर्णित योजना के कारण स्वास्थ्य अच्छा होने से युवा लोग कुशल कामगार के रूप में निजी क्षेत्रों में आस–पास के कस्बों में काम कर रहे हैं। 94 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार युवाओं के पलायन दर में कमी आयी है। छोटे–मोटे व्यवसायों के प्रति भी युवाओं में उन्मुखता देखी गयी है। इस प्रकार से वर्णित योजना युवाओं के आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक हुई है।

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा सहूरपुर ग्राम का समग्र विकास सुनिश्चित हुआ है। ग्राम की शिक्षा एवं स्वास्थ्य व्यवस्था के साथ ही महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों में भी सुधार आया है। लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना के कारण सामाजिक न्याय भी सुनिश्चित हुआ है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा कृत कार्य से लोगों में संतुष्टि का भाव आया है। योजना अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल रही है जिसकी पुष्टि अध्ययन से प्राप्त आंकड़े करते हैं। अवलोकन में पाया गया कि गांव के लोग जल का अधिक अपव्यय कर रहे हैं जिसके लिए उनमें जागरूकता लाने की जरूरत है ताकि वह जल संरक्षण के प्रति संवेदनशील हो सकें।

9.0 सुझाव

- लोगों को पेयजल के महत्त्व के प्रति संवेदनशील, शिक्षित एवं जागरूक करने की जरूरत है।
- जल के अपव्यय के प्रति लोगों को संवेदनशील बनाया जाना चाहिए।

- लोगों को स्वच्छ पेयजल का स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयोगिता एवं उपादेयता को समझाने के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाने की आवश्यकता है।
- समाज कार्य हस्तक्षेप द्वारा लोगों के व्यवहार परिवर्तन में सहायता मिल सकती है जिससे वह जल संरक्षण के प्रति प्रेरित हो सकते हैं।
- जल संरक्षण के क्षेत्र में कार्य करने वाले गैर–सरकारी संगठनों का सहयोग लिया जाना समीचीन होगा।

ग्राम गरौली शुक्ल, विकास खण्ड बबेरू, जनपद बाँदा

ग्रामीण क्षेत्र में निवासित प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 2019 से संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना का ग्राम गरौली शुक्ल, विकास खण्ड बबेरू, जनपद बाँदा में रहने वाले लोगों के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन प्रस्तुत शोध में किया गया है।

1.0 अध्ययन की विधि

अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन विधि पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सर्वप्रथम ग्राम गरौली शुक्ल की कुल जनसंख्या, ग्राम में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्री कौशल किशोर यादव से ग्राम गरौली शुक्ल की समग्रता के संदर्भ में बात किया गया। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों से भी बात करके गरौली शुक्ल ग्राम की मूलभूत समस्याओं एवं उपलब्ध भौतिक संसाधनों के संदर्भ में जानकारी प्राप्त किया गया। इसके अतिरिक्त ग्राम गरौली शुक्ल में संचालित विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों तथा विद्यालय में नामांकित विद्यार्थियों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, ड्राप आउट की दर, विद्यालय में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं, विद्यालय में नल संयोजन की स्थिति आदि की

जानकारी प्राप्त की गई। ग्राम में संचालित मिनी आंगनबाड़ी केन्द्र की सहायिका एवं आशा से भी बात करके गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं एवं शिशुओं के

स्वास्थ्य के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। गांव में स्वास्थ्य केन्द्र का अभाव पाया गया। गांव की महिलाओं द्वारा गठित स्वयं सहायता समूह की महिलाओं से भी चर्चा करके योजना द्वारा आये बदलावो के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके पश्चात् न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों से घर–घर जाकर प्रत्यक्ष रूप से संपर्क स्थापित करके ‘‘हर घर नल–हर घर जल’’ योजना के संचालन के पश्चात् उनके जीवन में आये बदलावों के संदर्भ में जानकारी एकत्रित की गयी तथा वर्णित योजना द्वारा ग्रामीण लोगों के जीवन मूल्यों में आये बदलावों का अवलोकन किया गया।

2.0 जनसंख्या एवं नल संयोजन की स्थिति

ग्राम गरौली शुक्ल की कुल आबादी–900 है एवं कुल परिवारों की संख्या–100 तथा मतदाताओं की संख्या–500 है। ग्राम गरौली शुक्ल में नल कनेक्शन स्कोप–73 है

जिसके सापेक्ष 100 नल कनेक्शन दिये गये हैं। ग्राम में निवासित सभी परिवारों को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त करते हुए नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। सभी नल अच्छे से काम कर रहे हैं।

3.0 कृषि की स्थिति एवं आय के स्रोत

ग्राम गरौली शुक्ल से संबद्ध हितधारकों एवं न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों से परिचर्चा में प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम में कुल लगभग 600 बीघा जमीन उपलब्ध

है जो कि 100 प्रतिशत उपजाऊ है जिसमें कृषि कार्य किया जाता है। प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम गरौली शुक्ल में निवासित लोगों की आय का मुख्य साधन कृषि, पशुपालन एवं मजदूरी है। ग्राम के कुछ लोग दिल्ली, पंजाब, मुंबई, सूरत, अहमदाबाद, गुड़गांव आदि शहरों/महानगरों में जाकर दिहाड़ी–मजदूरी तथा कारखानों में काम करके

अपनी जीविका चला रहे हैं। कुछ लोग गांव में रहते हुए कृषि कार्य के साथ–साथ छोटे–मोटे व्यवसाय भी कर रहे हैं जिससे उन्हें अतिरिक्त आमदनी हो रही है।

4.0 ग्राम में विद्यालय की स्थिति

ग्राम गरौली शुक्ल, वि0ख0 बबेरू, जनपद बाँदा में एक कम्पोजिट विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है। विद्यालय को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से पूर्णतः संतृप्त किया जा चुका है जिससे नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति हो रही है। विद्यालय में पर्याप्त शिक्षक सेवायोजित हैं। विद्यालय में मूलभूत सुविधायें भी उपलब्ध हैं तथा पठन–पाठन का अच्छा माहौल भी है।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

5.0 निदर्श निर्धारण

निदर्श की इकाइयों के निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। गरौली शुक्ल ग्राम की कुल जनसंख्या 900 के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार से 900/10 = 90 (पूर्ण करने पर) न्यादर्शों को प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित किया गया है जिसमें 45 महिला एवं 45 पुरूष सम्मिलित हैं। अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्श की इकाइयों से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा उनके जीवन–स्तर में आये बदलावों के संदर्भ में जानकारी एकत्रित की

गयी है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत अध्ययन में गरौली शुक्ल ग्राम से संबद्ध हितधारकों से भी वर्णित योजना द्वारा आये बदलावों के संदर्भ में परिचर्चा किया गया है।

6.0 समाविष्ट के मानदण्ड

गरौली शुक्ल ग्राम में केन्द्र सरकार द्वारा संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' द्वारा लोगों के जीवन स्तर में आये परिवर्तनों के मूल्यांकन हेतु ग्राम की सम्पूर्ण जनसंख्या के 1/10 वें भाग के साथ ही, ग्राम से संबद्ध हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

7.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसी इकाई को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो कि गरौली शुक्ल ग्राम से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था।

8.0 परिणाम एवं चर्चा

ग्राम गरौली शुक्ल, विकास खण्ड बबेरू का सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन के आधार पर ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना द्वारा लोगों के जीवन–स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श की इकाइयों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण वस्तुनिष्ठ एवं निष्पक्ष रूप से करते हुए निष्कर्ष निकाले गये हैं, जो कि निम्नलिखित हैं–

8.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा ग्राम गरौली शुक्ल में महिलाओं के जीवन स्तर में आये परिवर्तन का अध्ययन करने के लिए कुल 45 (कुल न्यादर्शों का 50

प्रतिशत) महिला उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत इकाइयों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के लागू होने के बाद से महिलाओं के स्वास्थ्य में बहुत सुधार आया है। 100 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि गर्भवती एवं स्तनपान कराने वाली माताओं का स्वास्थ्य स्तर स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण बेहतर हुआ है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वर्णित योजना द्वारा पेट संबंधी एवं अन्य बीमारियों में कमी आयी है जिसके कारण इलाज पर होने वाले खर्च की बचत हुई है। 100 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के कारण दूषित पेयजल से छुटकारा मिला है। गांव

की ए.एन.एम. ने बताया कि बीमारियों में कमी आने के कारण मातृ मृत्यु–दर एवं शिशु मृत्यु–दर में कमी आयी है। 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार महिलाओं की भागीदारी व्यावसायिक गतिविधियों में बढ़ी है जिसके कारण वह दैनिक खर्च के लिए स्वयं पर निर्भर हुई हैं। अब महिलायें बच्चों एवं परिवार की देखभाल पर अधिक समय दे रही हैं जिसके कारण उनका सम्मान परिवार में बढ़ा है। शौचालयों के उपयोग में आने के कारण महिलाओं के सम्मान एवं सुरक्षा में वृद्धि हुई है। इस प्रकार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा महिलाओं का समग्र विकास सुनिश्चित हुआ है।

8.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

ग्राम गरौली शुक्ल में एक कम्पोजिट विद्यालय संचालित किया जा रहा है। विद्यालय को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त किया जा चुका है जिससे

स्वच्छ पेयजल की नियमित रूप से आपूर्ति हो रही है। विद्यालय में बच्चों के नामांकन में

वृद्धि हुई है। प्रधानाचार्य के अनुसार बच्चों के ड्राप आउट की दर में कमी आयी है। प्रधानाचार्य ने बताया कि बालिकाओं की शिक्षा में अधिक सुधार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के कारण देखा गया है। विद्यालय में शौचालय की सुविधा उपलब्ध होने के कारण बच्चों का आकर्षण विद्यालय में बढ़ा है क्योंकि अब बच्चों को शौच हेतु खुले में नहीं जाना पड़ता है। 96 प्रतिशत न्यादर्श की इकाइयों ने बताया कि विद्यालय में अच्छी पढ़ाई हो रही है क्योंकि बच्चे नियमित रूप से विद्यालय जा रहे हैं जिससे अध्यापक भी पढ़ाने के लिए प्रेरित हुए हैं। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि गांव में शिक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता आयी है। शिक्षकों ने बताया कि बच्चों में स्वच्छता आने से उनका पढ़ने में मन अधिक लग रहा है।

8.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन पर आधारित अध्ययन में 100 प्रतिशत न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के कारण ग्राम गरौली शुक्ल में निवासित लोगों के समग्र स्वास्थ्य में सुधार आया है। 98 प्रतिशत इकाइयों ने बताया कि स्वच्छ पेयजल के कारण जल–जनित बीमारियों में कमी आयी है। 94 प्रतिशत के अनुसार इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है जिसके कारण धन की बचत एवं कर्ज में कमी आयी है। स्थानीय डॉक्टर से हुई परिचर्चा में जानकारी मिली कि अब दूषित जल से होने वाली बीमारियों जैसे– डायरिया, पेचिस, दस्त, पीलिया आदि बीमारियों में कमी आयी है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उनके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य

में पूर्व की अपेक्षा अधिक सुधार हुआ है। 96 प्रतिशत के अनुसार स्वास्थ्य में सुधार होने के कारण कार्य क्षमता में वृद्धि हुई है। इस प्रकार यह कह सकते हैं कि ''हर घर नल–हर

घर जल'' योजना द्वारा स्वास्थ्य को उन्नत करने में उल्लेखनीय योगदान प्राप्त हुआ है।

8.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्श की इकाइयों से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन से ग्राम गरौली शुक्ल में निवासित सभी परिवारों को स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति पाइप द्वारा की जा रही है। अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्शों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालन के पूर्व गांव में केवल समृद्ध एवं उच्च जाति के लोगों तक ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धा थी। निम्न स्तर के लोगों को दूषित पेयजल से ही अपनी दैनिक क्रियाओं को चलाना पड़ता था। जल को

लेकर गांव में लड़ाई–झगड़े भी हुआ करते थे जिसके कारण गांव में सामाजिक तनाव बना रहता था। अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालित होने से ग्राम गरौली शुक्ल में सामाजिक एकता के साथ ही शांति एवं सहयोग का भाव भी विकसित हुआ है। अब लोगों में अपनेपन की

भावना आयी है। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना ने सामाजिक गतिशीलता को प्रेरित करके लोगों के रहन–सहन के स्तर को उच्च किया है। शादी–विवाह के मामले में भी परिवर्तन देखे गये हैं। बाल–विवाह एवं बेमेल विवाह में कमी आयी है। 93 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि अब लोग विवाह में खूब खर्च कर रहे हैं। अतएव यह कहा जा सकता है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन आया है जिसके कारण सामाजिक न्याय की स्थापना गांव में हुई है। शादी–विवाह में भी परिवर्तन देखा गया है।

8.5 रोजगार के अवसर

ग्राम गरौली शुक्ल में निवासित लोगों की आय का मुख्य साधन कृषि, पशुपालन एवं मजदूरी है। गांव के कुछ लोग दिहाड़ी–मजदूरी तथा छोटे–मोटे व्यवसाय करके भी जीवन–यापन कर रहे हैं। 91 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ‘‘हर घर नल–हर घर जल’’ योजना के कारण युवाओं के स्वास्थ्य में सुधार आने से वह गांव में ही रहकर छोटे–मोटे व्यवसायों के प्रति उन्मुख हुए हैं। युवाओं की भागीदारी कृषि एवं पशुपालन में अधिक देखी गयी है। डेयरी, किराना की दूकान, गोलगप्पे की दूकान, कपड़ा बेचने की

दूकान, मोबाइल शॉप की दूकान आदि में भी युवाओं की भागीदारी बढ़ी है। गांव व आस–पास अनेक युवा दूकान खोलकर पैसे कमा रहे हैं। 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि युवाओं के पलायन दर में कमी आयी है क्योंकि वह गांव में ही सभी सुविधायें उपलब्ध होने के कारण यहीं पर रहकर जीविका चलाने के इच्छुक हैं।

राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन द्वारा संचालित ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना द्वारा कृत कार्य से गरौली शुक्ल ग्राम में निवासित लोगों के जीवन–स्तर में समग्र परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है। वर्णित योजना द्वारा स्वास्थ्य स्तर में सुधार हुआ है। महिलाओं की दशा में भी सकारात्मक परिवर्तन आया है। शिक्षा एवं स्वास्थ्य में आये बदलाव अनुकरणीय हैं। ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में गरौली शुक्ल गांव में सफल रही है जिसकी पुष्टि अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर की जा सकती है। अध्ययनकर्ता द्वारा अवलोकन में पाया गया कि गांव के लोगों द्वारा जल का अधिक अपव्यय किया जा रहा है जिसके लिए प्रयास किये जाने की जरूरत है।

9.0 सुझाव

- गांव के लोग जल का अधिक अपव्यय कर रहे हैं, इसलिए उन्हें पेयजल के प्रति संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है।
- ग्राम के लोग स्वच्छ पेयजल की उपयोगिता को समझें, इसके लिए उनमें चेतना का विकास तथा जागरूकता लाने की जरूरत है।
- गैर–सरकारी संगठनों के सहयोग से गांव में जागरूकता कार्यक्रम संचालित किये जाने चाहिए।
- गांव के विद्यालयों में ताजे जल की आपूर्ति करने के लिए प्रयास किया जाना समीचीन होगा।

- समाज कार्य हस्तक्षेप द्वारा पेयजल की उपादेयता को लोगों को समझाया जा सकता है।
- गांव में यदि जल सहेलियां कार्य कर रही हैं तो, जल सहेलियों के सहयोग द्वारा भी जल के अपव्यय को रोका और लोगों को संवेदनशील बनाया जा सकता है।
- पंचायत सदस्यों एवं फ्रंट लाइन वर्कर के सहयोग से भी जागरूकता कार्यक्रमों को संचालित किया जा सकता है।
- सरकार को जल संरक्षण के प्रति अनिवार्य रूप से लोगों को जागरूक करना चाहिए ताकि अपव्यय होने वाले जल को रोका जा सके क्योंकि बुंदेलखण्ड क्षेत्र वैसे ही जल संकट का सामना करता रहता है, यदि इस पर ध्यान नहीं दिया गया तो भूजल स्तर और नीचे जा सकता है जिससे जल संकट की समस्या बुंदेलखण्ड क्षेत्र में और गंभीर हो सकती है।

ग्राम थरथुआ, विकास खण्ड बबेरू, जनपद बाँदा

ग्रामीण क्षेत्र में निवासित प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 2019 से संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना का ग्राम थरथुआ, विकास खण्ड बबेरू, जनपद बाँदा में रहने वाले लोगों के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन प्रस्तुत शोध में किया गया है। अध्ययन की विधि इस प्रकार है–

1.0 अध्ययन की विधि

अवलोकन एवं सहभागी मूल्यांकन विधि पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सर्वप्रथम ग्राम थरथुआ की कुल जनसंख्या, ग्राम में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्री कौशल किशोर यादव से ग्राम थरथुआ की समग्रता के संदर्भ में बात किया गया। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों से भी बात करके थर्थुआ ग्राम की मूलभूत समस्याओं एवं उपलब्ध भौतिक संसाधनों के संदर्भ में जानकारी प्राप्त किया गया। इसके अतिरिक्त ग्राम थर्थुआ में संचालित विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों तथा विद्यालय में नामांकित विद्यार्थियों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, ड्राप आउट की दर, विद्यालय में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं, विद्यालय में नल संयोजन की स्थिति आदि की जानकारी प्राप्त की

गई। ग्राम में संचालित आंगनबाड़ी केन्द्र की सहायिका श्रीदेवी से बात करके गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं एवं शिशुओं के स्वास्थ्य के संदर्भ में जानकारी

प्राप्त की गयी। गांव में स्वास्थ्य केन्द्र का अभाव पाया गया। गांव की महिलाओं द्वारा गठित स्वयं सहायता समूह की महिलाओं से भी चर्चा करके योजना द्वारा आये बदलावो के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके पश्चात् न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों से घर–घर जाकर प्रत्यक्ष रूप से संपर्क स्थापित करके ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के पश्चात् उनके जीवन में आये बदलावों के संदर्भ में जानकारी एकत्रित की गयी तथा वर्णित योजना द्वारा ग्रामीण लोगों के जीवन मूल्यों में आये बदलावों का अवलोकन किया गया।

2.0 जनसंख्या एवं नल संयोजन की स्थिति

ग्राम थरथुआ की कुल आबादी–1200 है एवं कुल परिवारों की संख्या–175 तथा मतदाताओं की संख्या–700 है। ग्राम थर्थुआ में नल कनेक्शन स्कोप–162 है जिसके

सापेक्ष 162 नल कनेक्शन दिये गये हैं। ग्राम में निवासित सभी परिवारों को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त करते हुए नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। पेयजल के लिए लगे सभी नल अच्छे से काम कर रहे हैं जिसमें कोई–भी टूट–फूट नहीं है।

3.0 कृषि की स्थिति एवं आय के स्त्रोत

ग्राम थरथुआ से संबद्ध हितधारकों एवं न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों से परिचर्चा

में प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम में कुल लगभग 1400 बीघा जमीन उपलब्ध है जो कि 100 प्रतिशत उपजाऊ है जिसमें कृषि कार्य किया जाता है। प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम थर्थुआ में निवासित लोगों की आय का मुख्य साधन कृषि, पशुपालन एवं

मजदूरी है। ग्राम के कुछ लोग शहरों/महानगरों में जाकर दिहाड़ी–मजदूरी तथा कारखानों में काम करके अपनी जीविका चला रहे हैं। कुछ लोग गांव में रहते हुए कृषि कार्य के साथ–साथ छोटे–मोटे व्यवसाय भी कर रहे हैं जिससे उन्हें अतिरिक्त आमदनी हो रही है। गांव के कुछ लोग सरकारी नौकरी भी कर रहे हैं।

4.0 ग्राम में विद्यालय की स्थिति

ग्राम थरथुआ, विकास खण्ड बबेरू, जनपद बाँदा में एक कम्पोजिट विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है। विद्यालय को ''हर घर नल–हर घर जल''

योजना से पूर्णतः संतृप्त किया जा चुका है जिससे नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति हो रही है। विद्यालय में पर्याप्त शिक्षक सेवायोजित हैं। विद्यालय में मूलभूत

सुविधायें भी उपलब्ध हैं तथा पठन–पाठन का अच्छा माहौल भी है। बच्चें नियमित रूप से पढ़ने के लिए आते हैं।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

5.0 निदर्श निर्धारण

निदर्श की इकाइयों के निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। थरथुआ ग्राम की कुल जनसंख्या 1200 के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार से 1200/10 = 120 (पूर्ण करने पर) न्यादर्शों को प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित किया गया है जिसमें 60 महिला एवं 60 पुरूष सम्मिलित हैं। अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्श की इकाइयों से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा उनके जीवन–स्तर में आये बदलावों के संदर्भ में जानकारी एकत्रित की गयी है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत अध्ययन में थर्थुआ ग्राम से संबद्ध हितधारकों से भी वर्णित योजना द्वारा आये बदलावों के संदर्भ में परिचर्चा किया गया है।

6.0 समाविष्ट के मानदण्ड

थरथुआ ग्राम में केन्द्र सरकार द्वारा संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' द्वारा लोगों के जीवन स्तर में आये परिवर्तनों के मूल्यांकन हेतु ग्राम की सम्पूर्ण

जनसंख्या के 1/10 वें भाग के साथ ही, ग्राम से संबद्ध हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

7.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसी इकाई को सम्मिलित नहीं किया गया है, जो कि थरथुआ ग्राम से सम्बद्ध और वर्णित योजना का लाभार्थी नहीं था।

8.0 परिणाम एवं चर्चा

ग्राम थरथुआ, विकास खण्ड बबेरू का सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन के आधार पर ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना द्वारा लोगों की जीवन–स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श की इकाइयों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण वस्तुनिष्ठ एवं निष्पक्ष रूप से करते हुए निष्कर्ष निकाले गये हैं, जो कि निम्नलिखित हैं–

8.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा ग्राम थरथुआ में महिलाओं के जीवन स्तर में आये परिवर्तन का अध्ययन करने के लिए कुल 60 (कुल न्यादर्शों का 50 प्रतिशत) महिला उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया गया है जिससे प्राप्त परिणाम इस प्रकार है–

सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन में पाया गया कि सभी परिवारों को नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि स्वच्छ पेयजल के कारण महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार आया है जिसके कारण वह अधिक सक्रिय हो गयी हैं। 98 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने बताया कि वर्णित योजना द्वारा पेट संबंधी एवं अन्य

बीमारियों में कमी आयी है जिसके कारण इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है जिससे धन की बचत हुई है। अध्ययन की 100 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा दूषित पेयजल से छुटकारा मिला है। हितधारकों एवं न्यादर्शों ने बताया कि गांव में मातृ मृत्यु–दर एवं शिशु मृत्यु–दर में स्वच्छ पेयजल की

उपलब्धता के कारण कमी आयी है। 94 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं के अनुसार श्रम बल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। सिलाई–कढ़ाई एवं कृषि तथा पशुपालन में महिलाओं का योगदान अधिक हुआ है। शौचालयों के उपयोग के कारण भी महिलाओं के सम्मान एवं सुरक्षा के साथ ही बीमारियों में कमी आयी है। समय की बचत होने के कारण महिलायें बच्चों एवं परिवार की देखभाल पर अधिक समय दे रही हैं जिसके कारण उनका सम्मान परिवार में बढ़ा है। वर्णित योजना द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण एवं स्वावलंबन में वृद्धि हुई है।

8.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

ग्राम थरथुआ में सरकार द्वारा एक कम्पोजिट विद्यालय संचालित किया जा रहा है। विद्यालय को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त किया जा चुका है जिससे स्वच्छ पेयजल की नियमित रूप से आपूर्ति हो रही है। प्रधानाचार्य श्री प्रभाकर सिंह के अनुसार बच्चों के नामांकन दर में वृद्धि एवं ड्राप आउट की दर में कमी आयी है। बच्चों की उपस्थिति दर में भी सुधार देखा गया है। अब बच्चे नियमित रूप से विद्यालय आ रहे हैं और पूरे समय विद्यालय में रहकर पढ़ाई कर रहे हैं। वर्णित योजना के कारण बालिकाओं की शिक्षा में अधिक सुधार आया है। 98 प्रतिशत न्यादर्श की इकाइयों के अनुसार बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आने के कारण वह नियमित रूप से विद्यालय भेजे जा रहे हैं। न्यादर्शों ने बताया कि बच्चों का मन अब अध्ययन में लग रहा है, वह घर पर भी अधिकांश समय पढ़ाई कर रहे हैं।

8.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत इकाइयों ने कहा कि वर्णित योजना के कारण ग्राम थर्थुआ में निवासित लोगों के समग्र स्वास्थ्य में सुधार आया है जिससे बीमारियों में कमी आयी है। 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार पेट संबंधी बीमारियों के कम होने के साथ ही जल–जनित बीमारियों में भी कमी आयी है जिससे इलाज पर होने वाले खर्च में कमी आयी है परिणामस्वरूप धन की बचत हुई है। 94 प्रतिशत लोगों ने बताया कि अब खाना ठीक से पच रहा है। शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में पूर्व की अपेक्षा अधिक सुधार होने के कारण वह रोजगारपरक कार्यों में अधिक समय दे रहे हैं। शौचालयों के कार्यात्मक होने के कारण गंदगी से फैलने वाली बीमारियों में कमी आयी है जिससे भी स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है।

8.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

थरथुआ ग्राम में निवासित सभी परिवारों को स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा नियमित रूप से किया जा रहा है। लोगों ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन से पूर्व गांव के केवल समृद्ध एवं उच्च जाति के लोगों तक ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धा थी जबकि निम्न जाति एवं आय के लोगों को दूषित पेयजल से ही काम चलाना पड़ता था। गांव के लोगों में सामाजिक तनाव बना रहता था। कभी–कभी जल प्राप्ति को लेकर झगड़े भी हो जाया करते थे। अध्ययन में सम्मिलित 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालित होने से ग्राम थरथुआ में सामाजिक एकता एवं सहकार का भाव आया है। जीवन–स्तर में बदलाव के कारण लोगों की सोच में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है जिसके कारण शादी–विवाह के मामले में भी परिवर्तन आये हैं। जागरूकता

के कारण बाल–विवाह पर गांव में रोक लगी है क्योंकि वह इसके दुष्परिणामों से परिचित हो गये हैं।

8.5 रोजगार के अवसर

ग्राम थरथुआ में निवासित लोगों की आय का मुख्य साधन कृषि, पशुपालन एवं मजदूरी है। गांव के कुछ लोग दिहाड़ी–मजदूरी तथा छोटे–मोटे व्यवसाय करके भी जीवन–यापन कर रहे हैं। 93 प्रतिशत अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के कारण लोगों के स्वास्थ्य में सुधार आने से उनकी भूमिका रोजगारपरक कार्यों में बढ़ी है। युवा लोग छोटे–मोटे व्यवसायों के प्रति उन्मुख

हुए हैं। युवाओं की भागीदारी कृषि एवं पशुपालन में अधिक बढ़ी है। अवलोकन में पाया गया कि युवाओं के पलायन दर में कमी आयी है। कुशल कामगार के रूप में युवा लोग निजी क्षेत्र की नौकरियों में संलग्न होकर अच्छी आय प्राप्त कर रहे हैं। युवाओं से बात करने पर पता चला कि वह गांव में ही रहकर कार्य करने के इच्छुक हैं। इस प्रकार से युवाओं के आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी हुई है। अतएव यह कहना समीचीन होगा कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा बहु–आयामी लक्ष्यों को एक साथ लक्षित किया गया है जिससे कि ग्राम में रहने वाले लोगों के समग्र विकास को सुनिश्चित किया जा सके।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन द्वारा संचालित ''जल जीवन मिशन'' के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना जिस उद्देश्य को लेकर कार्य कर रही है, उसके प्राप्ति की पुष्टि ग्राम थरथुआ, विकास खंड बबेरू का टीम सर्वेक्षण एवं अध्ययन के पश्चात प्राप्त आंकड़ों द्वारा होता है। सरकार द्वारा संचालित एवं पोषित परियोजना अपने लक्ष्य के अनुरूप कार्य करते हुए थरथुआ ग्राम के लोगों के जीवन स्तर एवं मूल्यों को उच्च करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही है। ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना का सकारात्मक परिणाम गांव में निवासित लोगों पर पड़ा है। वर्णित योजना लोगों में खुशहाली एवं समृद्धि का प्रतीक बनी हुई है।

9.0 सुझाव

- गांव के लोग जल का अधिक अपव्यय कर रहे हैं, इसलिए उन्हें पेयजल के प्रति संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है।

- थरथुआ ग्राम के लोग स्वच्छ पेयजल की उपयोगिता को समझें, इसके लिए उनमें चेतना का विकास तथा जागरूकता लाने की जरूरत है।
- गैर–सरकारी संगठनों के सहयोग से गांव में जागरूकता कार्यक्रम संचालित किये जाने चाहिए।
- गांव के विद्यालयों में ताजे जल की आपूर्ति करने के लिए प्रयास किया जाना समीचीन होगा।
- समाज कार्य हस्तक्षेप द्वारा पेयजल की उपादेयता को लोगों को समझाया जा सकता है।
- गांव में यदि जल सहेलियां कार्य कर रही हैं तो, जल सहेलियों के सहयोग द्वारा भी जल के अपव्यय को रोका और लोगों को संवेदनशील बनाया जा सकता है।
- पंचायत सदस्यों एवं फ्रंट लाइन वर्कर के सहयोग से भी जागरूकता कार्यक्रमों को संचालित किया जा सकता है।
- सरकार को जल संरक्षण के प्रति अनिवार्य रूप से लोगों को जागरूक करना चाहिए ताकि अपव्यय होने वाले जल को रोका जा सके क्योंकि बुंदेलखण्ड क्षेत्र वैसे ही जल संकट का सामना करता रहता है, यदि इस पर ध्यान नहीं दिया गया तो भूजल स्तर और नीचे जा सकता है जिससे जल संकट की समस्या बुंदेलखण्ड क्षेत्र में और गंभीर हो सकती है।

ग्राम बड़ोखर खुर्द, विकास खण्ड बड़ोखर, जनपद बाँदा

प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्र में निवासित प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 2019 से संचालित ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना का ग्राम बड़ोखर खुर्द, विकास खण्ड बड़ोखर, जनपद बाँदा में रहने वाले लोगों के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

1.0 अध्ययन की विधि

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सर्वप्रथम ग्राम बड़ोखर खुर्द, विकास खण्ड बड़ोखर, जनपद बाँदा की कुल जनसंख्या, ग्राम में परिवारों की संख्या, जातीय समीकरण, नल संयोजनों की संख्या, शक्ति संरचना, प्राथमिक विद्यालयों की संख्या, पूर्व–माध्यमिक विद्यालय, आंगनबाड़ी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। शक्ति संरचना में सर्वप्रथम ग्राम प्रधान श्रीमती लक्ष्मी देवी से ग्राम बड़ोखर खुर्द की समग्रता के संदर्भ में बात किया गया। ग्राम प्रधान के साथ–साथ ग्राम के सभी वार्ड सदस्यों एवं पूर्व ग्राम प्रधान से भी बात करके बड़ोखर खुर्द ग्राम की मूलभूत समस्याओं एवं उपलब्ध भौतिक संसाधनों तथा वर्णित योजना के प्रभाव के संदर्भ में जानकारी प्राप्त किया गया। इसके अतिरिक्त ग्राम बड़ोखर खुर्द में संचालित विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों तथा विद्यालय में नामांकित विद्यार्थियों से बातचीत कर विद्यालय में छात्र/छात्राओं के नामांकन, ड्राप आउट की दर, विद्यालय में उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं, विद्यालय में

नल संयोजन की स्थिति आदि की जानकारी प्राप्त की गई। ग्राम में संचालित आंगनबाड़ी केन्द्र की कार्यकत्री किरन शर्मा एवं स्वास्थ्य केन्द्र की ए.एन.एम. श्रीमती बन्दना बर्मा से

भी बात करके गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं एवं शिशुओं के स्वास्थ्य के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की गयी। इसके पश्चात् न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों से घर–घर जाकर प्रत्यक्ष रूप से संपर्क स्थापित करके ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना

के संचालन के पश्चात् उनके जीवन में आये बदलावों के संदर्भ में जानकारी एकत्रित की गयी तथा वर्णित योजना द्वारा ग्रामीण लोगों के जीवन स्तर में आये बदलावों का अवलोकन किया गया।

2.0 जनसंख्या एवं नल संयोजन की स्थिति

ग्राम बड़ोखर खुर्द की कुल आबादी–3198 है एवं कुल परिवारों की संख्या–545 तथा मतदाताओं की संख्या–1800 है। ग्राम बड़ोखर खुर्द में नल कनेक्शन स्कोप–545 है जिसके सापेक्ष 545 नल कनेक्शन दिये भी गये हैं। सभी परिवारों को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से संतृप्त करते हुए नियमित रूप से स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जा रही है। अवलोकन में पाया गया कि नल संयोजन की बेहतर अवसंरचना बड़ोखर खुर्द ग्राम में है।

3.0 कृषि की स्थिति एवं आय के स्त्रोत

ग्राम प्रधान एवं अन्य पंचायत सदस्यों से प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम बड़ोखर खुर्द में खेती योग्य पर्याप्त जमीन उपलब्ध है जिसमें से दलहन फसलों का उत्पादन अधिक होता है। ग्राम बड़ोखर खुर्द में निवासित लोगों की आय का मुख्य साधन कृषि, पशुपालन तथा मजदूरी है क्योंकि अधिकांश आबादी की आजीविका कृषि, पशुपालन एवं मजदूरी पर ही निर्भर है। ग्राम के कुछ लोग जीवकोपार्जन के कारण शहरों में पलायन कर गये हैं तथा कुछ लोग गांव में ही रहकर कृषि कार्य के साथ ही छोटे–मोटे व्यवसाय भी कर रहे हैं।

4.0 ग्राम में विद्यालय की स्थिति

ग्राम बड़ोखर खुर्द में एक कम्पोजिट विद्यालय एवं एक उच्च प्राथमिक विद्यालय शासन द्वारा संचालित किया जा रहा है। कम्पोजिट विद्यालय में कुल 164 विद्यार्थी

नामांकित हैं जिनमें से 85 बालक एवं 79 बालिकायें हैं। उच्च प्राथमिक विद्यालय में कुल 98 विद्यार्थी नामांकित हैं। उक्त दोनों विद्यालय लगभग सभी मूलभूत सुविधाओं से

सुसज्जित है। विद्यालय में विद्यार्थी–शिक्षक अनुपात उचित पाया गया। दोनों विद्यालयों को ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा पेयजल की आपूर्ति नियमित रूप से की जा रही है।

नोट : *अध्ययन का उद्देश्य, उपकल्पना, प्रणाली तथा उपकरण पूर्व वर्णित विषय के अनुसार ही सुनिश्चित किया गया है।*

5.0 निदर्श निर्धारण

निदर्श की इकाइयों के निर्धारण हेतु स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। बड़ोखर खुर्द ग्राम की कुल जनसंख्या 3198 के 1/10 वें भाग को प्रत्येक प्रस्तर से अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार से 3198/10 = 320 (पूर्ण करने पर) न्यादर्शों को प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित किया गया है जिसमें 160 महिला एवं 160 पुरूष सम्मिलित हैं। अध्ययन में सम्मिलित न्यादर्श की इकाइयों से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा उनके जीवन–स्तर में आये बदलावों के संदर्भ में जानकारी एकत्रित की गयी है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत अध्ययन में बड़ोखर खुर्द ग्राम से संबद्ध हितधारकों से भी वर्णित योजना द्वारा आये बदलावों के संदर्भ में परिचर्चा किया गया है।

6.0 समाविष्ट के मानदण्ड

बड़ोखर खुर्द ग्राम में केन्द्र सरकार द्वारा संचालित परियोजना ''हर घर नल–हर घर जल'' द्वारा लोगों के जीवन स्तर में आये परिवर्तनों के मूल्यांकन हेतु ग्राम की सम्पूर्ण

जनसंख्या के 1/10 वें भाग के साथ ही, ग्राम से संबद्ध हितधारकों को भी अध्ययन का आधार बनाया गया, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर के स्त्री एवं पुरूष सम्मिलित हैं।

7.0 बहिष्करण के मानदण्ड

प्रस्तुत अध्ययन में किसी–भी ऐसी इकाई को न्यादर्श एवं हितधारकों के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है, जो कि बड़ोखर खुर्द ग्राम से सम्बद्ध और वर्णित योजना के लाभार्थी नहीं थे।

8.0 परिणाम एवं चर्चा

ग्राम बड़ोखर खुर्द विकास खण्ड बड़ोखर, जनपद बाँदा का सहभागी मूल्यांकन एवं अवलोकन के आधार पर ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना द्वारा लोगों की जीवन–स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श की इकाइयों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण वस्तुनिष्ठ एवं निष्पक्ष रूप से करते हुए निष्कर्ष निकाले गये हैं, जो कि निम्नलिखित हैं–

8.1 सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

प्रस्तुत अध्ययन के इस खण्ड में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा ग्राम बड़ोखर खुर्द में महिलाओं के जीवन स्तर में आये परिवर्तन का अध्ययन करने के लिए कुल 160 (कुल न्यादर्शों का 50 प्रतिशत) महिलाओं से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया

गया है। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार हैं– 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार आया है जिसके कारण वह कोई–भी कार्य करने में अधिक सक्षम हुई हैं। 96 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं के अनुसार घर में ही पेयजल की उपलब्धता के कारण महिलाओं के कार्य बोझ में कमी आयी है और समय की बचत

हुई है। 96 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के

संचालन के कारण पेट संबंधी बीमारियों में कमी आने से महिलाओं के स्वास्थ्य स्तर में सुधार आया है। न्यादर्श में सम्मिलित 100 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना लागू होने के पश्चात् महिलाओं का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य उन्नत हुआ है। जल उपलब्धता के कारण शौचालयों के कार्यात्मक होने से उनके सम्मान एवं सुरक्षा में वृद्धि हुई है। न्यादर्श में सम्मिलित 92 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं के अनुसार कृषि एवं पशुपालन तथा रोजगारपरक कार्यों में महिलाओं की भूमिका बढ़ी है। समय बचत होन से महिलायें बच्चों का पालन–पोषण अधिक अच्छे से कर रही हैं। परिवार को पर्याप्त समय देने के कारण उनका सम्मान बढ़ा है। इस प्रकार से ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थितियों में बदलाव करते हुए उन्हें एक सम्मानजनक जीवन प्रदान किया है।

8.2 शिक्षा की स्थिति में बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा शिक्षा की स्थिति को बेहतर करने में मदद मिली है। ग्राम बड़ोखर खुर्द में एक कम्पोजिट विद्यालय एवं एक उच्च प्राथमिक विद्यालय सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है। कम्पोजिट विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती आशा देवी के अनुसार विद्यालय में बच्चों के नामांकन दर में वृद्धि हुई है तथा ड्रापआउट की दर में कमी आयी है। बालिकाओं की शिक्षा में भी सुधार देखा गया है। उच्च प्राथमिक विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती तृप्ती श्रीवास्तव ने भी बताया कि वर्णित योजना के कारण शिक्षा में सुधार आया है। इनके अनुसार विद्यालय में बालिकाओं के

नामांकन दर में अधिक वृद्धि हुई है और वह नियमित रूप से विद्यालय आ भी रही हैं। अध्ययन में सम्मिलित 93 प्रतिशत उत्तरदाता कहते हैं कि बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होने तथा शिक्षा के प्रति जागरूकता आने के कारण माता–पिता द्वारा बच्चों की शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। 100 प्रतिशत न्यादर्श की इकाइयों के अनुसार वर्णित योजना के कारण गांव के लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूकता आयी है जिसके कारण

वह बच्चों को शिक्षा के लिए प्रेरित कर रहे हैं। शिक्षकों ने बताया कि विद्यालय में बच्चों को अच्छे से पढ़ाया जाता है और अभिभावकों को प्रेरित किया जा रहा है कि वह अपने बच्चों को नियमित विद्यालय भेजें और घर पर भी उन्हें पढ़ने का पर्याप्त से प्रदान करें। 96 प्रतिशत उत्तरदाता बताते हैं कि सभी बच्चे नियमित रूप से विद्यालय जा रहे हैं। शिक्षकों ने बताया कि बच्चों के सीखने की क्षमता में वर्णित योजना के कारण सुधार

आया है। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि ग्राम बड़ोखर खुर्द में शिक्षा का बेहतर माहौल ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के कारण उपलब्ध हुआ है जिसके कारण गांव की साक्षरता दर में सुधार आया है।

8.3 स्वास्थ्य संबंधी बदलाव

अध्ययन में सम्मिलित 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता के कारण जल–जनित एवं पेट

संबंधी बीमारियों में अधिक कमी आयी है। 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार लोगों के स्वास्थ्य में ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा सुधार होने के कारण इलाज पर

होने वाले खर्च में कमी आयी है जिसके कारण उन्हें कर्ज जाल में फंसने से मुक्ति मिली है। कार्य क्षमता में सुधार होने के कारण लोगों की भागीदारी उत्पादक कार्यों में बढ़ी है। 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार लोगों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार हुआ है। ए.एन.एम. से हुई परिचर्चा में पता चला कि स्वच्छ पेयजल के कारण लोगों का स्वास्थ्य पूर्व की अपेक्षा अधिक सुधरा है। दस्त, डायरिया, पेचिस जैसी बीमारियां बहुत कम हुई हैं। इस प्रकार से वर्णित योजना के कारण स्वास्थ्य स्तर में व्यापक स्तर पर सुधार आया है जिसके कारण यह योजना लोगों में खुशहाली का प्रतीक बनी हुई है।

8.4 सामाजिक व्यवहार में बदलाव

''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा सामाजिक व्यवहार के संदर्भ में बात करने पर अध्ययन में सम्मिलित लोगों ने बताया कि वर्णित योजना के संचालन के पूर्व गांव के सभी लोगों को स्वच्छ पेयजल प्राप्त नहीं हो पाता था क्योंकि वह स्वच्छ पेयजल पर होने वाले खर्च को वहन करने में सक्षम नहीं थे। लोगों ने बताया कि गांव के केवल अमीर एवं उच्च जाति के लोगों को ही स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन के पूर्व उपलब्ध थी। निम्न स्तर के लोग कुओं एवं तालाबों में उपलब्ध जल का उपयोग अपनी दैनिक क्रियाओं में करते थे जिसके कारण उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था। 95 प्रतिशत न्यादर्श में सम्मिलित इकाइयों ने बताया कि सभी को स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता होने के कारण अब सामाजिक सद्भाव में वृद्धि हुई है। लोग शांति से रह रहे हैं, उनमें अपनेपन का भाव आया है। सामाजिक एकता

को मजबूती मिली है। शादी–विवाह के मामले में आये परिवर्तनों के संदर्भ में बात करने पर 94 प्रतिशत न्यादर्श में सम्मिलित उत्तरदाताओं ने बताया कि अब शादी–विवाह में

दिखावा अधिक हो रहा है जिसके कारण खर्चों में बढ़ोत्तरी हुई है। बाल–विवाह में कमी आयी है और दहेज की समस्या कम हुई। जागरूक लोग दहेज को हतोत्साहित कर रहे हैं।

8.5 रोजगार के अवसर

रोजगार के क्षेत्र में आये परिवर्तनों के संदर्भ में चर्चा करने पर न्यादर्श में सम्मिलित लागों ने बताया कि ग्राम बड़ोखर खुर्द में अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि, पशुपालन

एवं मजदूरी है। गांव के कुछ लोग जीवकोपार्जन के कारण शहरों में पलायन कर गये हैं। गांव में कुछ लोग कृषि कार्य के साथ ही अन्य रोजगारपरक कार्यों में संलग्न हैं। स्वास्थ्य स्तर में सुधार आने के कारण युवाओं द्वारा रोजगार सेवक के अनुसार मनरेगा में काम की मांग बढ़ी है। कुशल कामगार के रूप में युवाओं द्वारा गांव के आस–पास

छोटे–मोटे व्यवसाय भी किये जा रहे हैं। युवाओं के आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी होने के कारण उनके रहन–सहन का स्तर उच्च हुआ है। रोजगार के विकल्पों ने युवाओं को जीने का नया जरिया प्रदान किया है। अब युवाओं का लगाव अपने गांव के प्रति बढ़ा है जिससे पलायन दर में कमी देखने को मिल रही है। ग्राम प्रधान ने बताया कि अधिक से अधिक युवाओं को मनरेगा में काम दिया जा रहा है जिससे उनकी आजीविका ठीक से चल सके।

निष्कर्षतः ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा ग्राम बड़ोखर खुर्द की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं महिलाओं की दशा तथा सामाजिक व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन किया गया है। लोगों के स्वास्थ्य में सुधार आने के कारण उनका समग्र विकास संभव हुआ है। महिलाओं को सशक्त करके उन्हें स्वावलंबी बनाने में भी ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना की भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। इससे इस तथ्य की पुष्टि होती है कि ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में ग्राम बड़ोखर खुर्द में सफल रही है और योजना द्वारा कृत कार्यों के प्रति लोगों में संतुष्टि का भाव आया है।

9.0 सुझाव

- लोगों को पेयजल के महत्त्व के प्रति शिक्षित एवं जागरूक किया जाना चाहिए।
- जल के उपभोग के प्रति लोगों को संवेदनशील बनाकर उनमें चेतना एवं जागरूकता का विकास किया जाये।

- स्वच्छ पेयजल का स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयोगिता एवं उपादेयता को समझाने के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाने की आवश्यकता है।
- समाज कार्य हस्तक्षेप द्वारा लोगों के व्यवहार परिवर्तन में सहायता मिल सकती है जिससे वह जल संरक्षण के प्रति प्रेरित हो सकते हैं।
- जल संरक्षण के क्षेत्र में कार्य करने वाले गैर–सरकारी संगठनों का सहयोग लिया जाना चाहिए।
- योजना की सार्थकता इसी में है कि लोग जल के महत्त्व को समझें और उसका उपयोग करते हुए संरक्षण करें।

साक्षात्कार अनुसूची

नोट : प्रस्तुत शोध कार्य के अंतर्गत ''जल जीवन मिशन'' योजना के अंतर्गत संचालित ''हर घर नल–हर घर जल'' परियोजना से ग्रामीण लोगों के जीवन स्तर में आये परिवर्तनों का अध्ययन किया गया है। इस संदर्भ में आपसे सही उत्तर देने की आशा की जाती है। आपसे प्राप्त आंकड़ों को पूर्णतः गोपनीय रखा जायेगा जिसका प्रयोग केवल प्रस्तुत शोध कार्य में ही किया जायेगा, अन्यत्र इसका कोई–भी प्रयोग नहीं किया जाएगा।

उत्तरदाताओं का परिचय

1. नाम ....

2. लिंग ....

3. आयु ....

4. जाति ....

5. शैक्षिक स्तर ....

6. वैवाहिक स्थिति ....

7. परिवार में कुल सदस्यों की संख्या ....

उत्तरदाताओं से पूछे गये प्रश्न

1. ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन से महिलाओं का स्वास्थ्य स्तर सुधरा है–

(1) हाँ (2) नहीं

2. ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना संचालित होने के पश्चात् महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में परिवर्तन हुआ है–

(1) हाँ (2) नहीं

3. वर्णित योजना द्वारा स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता से बच्चों एवं परिवार की देखभाल पर महिलाओं द्वारा अधिक समय दिया जा रहा है–

(1) हाँ (2) नहीं

4. उपर्युक्त योजना के संचालित होने से शिक्षा के प्रति आपके ग्राम में निवासित लोगों में जागरूकता आयी है–

(1) हाँ (2) नहीं

5. ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के लागू होने के बाद से बच्चे नियमित रूप से विद्यालय जा रहे हैं–

6. वर्णित योजना द्वारा बालक/बालिकाओं के नामांकन दर में सुधार हुआ है–

(1) हाँ (2) नहीं

7. ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना द्वारा स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति होने से लोगों के शारीरिक एवं मानसिक स्थितियों में सुधार आया है–

(1) हाँ (2) नहीं

8. उपर्युक्त योजना संचालित होने से जल–जनित बीमारियों में कमी आयी है–

(1) हाँ (2) नहीं

9. ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना के संचालन से इलाज हेतु खर्च में कमी आयी है–

(1) हाँ (2) नहीं

10. वर्णित योजना के संचालन से सभी आय एवं जाति समूह के लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हुआ है–

(1) हाँ (2) नहीं

11. योजना के संचालन से गांव में सामाजिक एकता, सहकार एवं खुशहाली आयी है–

(1) हाँ (2) नहीं

12. वर्णित योजना के लागू होने के बाद से शादी–विवाह में परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए हैं–

(1) हाँ (2) नहीं

13. रोजगार के उपलब्ध विविध विकल्पों में युवाओं का रूझान बढ़ा है–

(1) हाँ (2) नहीं

14. ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से युवाओं के पलायन दर में कमी आयी है–

(1) हाँ (2) नहीं

15. ''हर घर नल–हर घर जल'' योजना से युवाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि एवं अपने गांव के प्रति लगाव बढ़ा है–

(1) हाँ (2) नहीं

समाप्त